

संस्कृत-नामः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथ नन्द गतिद्वन्द्वद्विधा कृत्वा वत्सवः समवायिद्विधकालं विष्वद्विष्वद्वत्तन ॥ यथा
युक्तायोर्लुमासीयोषीमासदुयगमा नाम्नासयोषीमायाया एवमकादनायवः ॥ मार्ग
नीर्धसकामार्गः अथ ह्यायति कस्य यथा योषीतेषसकस्याही नयामायेथहाल्लुणा ॥ श्याल
यस्याः हा ल्लुणिकः स्यात्तेन येन का मयः ॥ वीणा रवमाधवा ना (वा) अथ ल्लुणिकः लुविस्तर्यः ॥
आवाहः प्रावणः सुस्या नराः प्रावणिकः सः स्यात्तरुस्याः पोषयदराः रुद्रयदाः समाः ॥

भास्वनेयानां

कारिणी

कारिणी

सादाविनच्छायाय यज्ञादिस्यात्कारिकं वाक्कलउर्कारिकिका रुमक४लिनित्रा
 म्रियां वसनेयसमयः सूत्ररिग्रीषाडुवाक४ निदायडल्लपगमः डमडव्वा नमस्र
 य४॥ म्रियां याट्ट म्रियां रुमि ववाअथगन म्रियां वगमभतव४ यीसि मातादीनयिः
 ले४कुमात् ॥ समस्तवा वत्सवाः ॥ द्वाहायनः श्रीग वत्समा४ मासनखादहा वग४येवा
 व४लदेवत४ देवयूगसहस्रं ॥ वाक्क४कलीकुनीवृणां मन्त्रकवदुदियांनायगाः

३१४॥

वृत्तान्तानां

सम्यक्

पित्रिवादिनां

वृत्तान्तानां

उत्तमांशः सौतत्रनेमवदवापुल्लक्यः ॥ अनेनमन्त्रकादोमिनवृत्तग ॥ वृत्तायिहिमिनवृत्तदिवाए

देवयज्ञेन नमस्कृतं हिमित्रं चनेमूर्चैतत्कल्याणाय

वृत्तुर्गोपलक्षितं नैक्षयिकलपुत्रं

नामकसफति४ सम्वरु४पुलय४कल्य४दय४कल्या न०००ययि अस्मीयक्यमानुयाभा
 पापं किलिषकलमयी ॥ कल्यैवृत्तिनेनाद्य मंधादुविगदुक्तं ॥ स्यादममम्रियायूय ॥
 यसीसुशतवृष४ ॥ मूलीतीपुमदाहर्ष उमादामादसमादा४ स्यादानन्दधुवानन्द४णम
 लातसूखानिव ॥ ४४ ॥ अयसीगिर्वरुद कल्याणमाभलं पुरं ॥ लावकूरुविकरुवा कृपालं
 कंमम्रियां ॥ लस४थजिह्वययाययूयसूखादिनाममल्लिका मवर्चिका एका४

पुत्रानां

मायया

वृत्तान्तानां

वृत्तान्तानां

कल्याणमाभलं

वृत्तान्तानां

वृत्तान्तानां

आदिनामयाननिर्माणवाच्य

पल्लवचनयानाम

मूद्यतल्लुजो॥ पससुवावकान्यमू नययः पुरावहाविषिः देवीदिष्टरुग(धयं) राग्यं मुनि
 यतिविधिः॥ रुतुर्नाकानपु मीजं निदानं लादिको वर्णः॥ दिग्गुह्यं आत्मापुनः यः पुनः पुनः
 तिः प्रिया॥ विनायः कालिकावस्तु गुणः॥ सर्ववज्रसमः॥ जनकं ननः नमानि जानि नल
 हिदुवः॥ पाणीपुवतनाजनी जनुजनुन नीविः॥ जातिर्जोतः॥ साप्राप्याकिमुप
 थगालिका॥ विरुतुवताद्वयं सार्कद्वन्मानं समनः॥ वृद्धिर्मनीयाधिवर्णाधीः पुनः॥
 मिनेशानिया नाम

कस्तुतिर्निर्गुतिः॥ पुमादानवधानता। कीमूलकीकुक्कः॥ ककुक्कः॥ ककुहलं॥ श्रीणीः
 विलाविद्याक। विरुमालालेन कथा। रुलालीलखमी हावाः॥ द्रियाः॥ जावरावजाः॥ पुववालि
 यवीहासाः॥ कीजालीलावनममव। वाआयदः॥ लक्ष्मः॥ कीजखलावकादनी॥ यमोनिदाय
 ॥ ददः॥ त्यालमानद्वयता। गूदहिलकादयुकिः॥ समीसमधनसमुमी॥ स्यादाद्वितर्कः
 हासः॥ त्यासः॥ समनाकिर्ग। मधमः॥ स्याद्विहर्तिर्नामाध्वशामहर्षण॥ कान्दितवृदिगि

23

अथ छिन्नं दुर्वर्तनी। अकयाधिर्वन्वासात् अक्षुब्धनी ॥२॥ अथ वहीसमास
दगनानि द्विद्वयः ॥

[illegible]

श्री॥

ली॥ यय॥ कीलालममृगं जीवनीं वनं वनीं। कवचमदकीं वाध॥ प्रकवसवृतामृखी॥ अरु॥
शुक्लं यथानीयं नीवकीं वाध॥ मययूषं वनसहि॥ मृदुआयाममृ॥ रुद्रसुवम
दुर्मिर्वा॥ सिर्यावीधिव॥ धामिष॥ मरुतुल्लालकलीली॥ स्यादावर्कसहिम॥ धुवनि॥ २५
पृथक्॥ यमोसा॥ विदुष॥ सिर्या॥ वकाणियटु॥ दा॥ स्या॥ उमा॥ धुलनिर्मा॥ कूलि॥ धेय
तीव॥ धुतीव॥ तटुनिष॥ दावावावयवावावी॥ तीव॥ धुनकदकन॥ दीया॥ सिर्यामकवी॥

॥ विसाव॥ कूलि॥ वाध॥ गणक॥ कूलि॥ कूलि॥ सुरु॥ दं॥ पा॥ नडलू॥ पीणि॥ क॥ स॥
मी॥ नलमी॥ नथिलि॥ विम॥ या॥ वी॥ सु॥ रु॥ नी॥ दया॥ क॥ द॥ पु॥ म॥ ल॥ म॥ र॥ हा॥ त॥ या॥ ता॥ धा॥ न॥ म॥ था॥ म॥
का॥ वा॥ हि॥ ता॥ म॥ रु॥ व॥ ग॥ ला॥ वा॥ जी॥ व॥ ग॥ कूलि॥ सि॥ मि॥ ति॥ मि॥ मि॥ द॥ य॥ था॥ था॥ या॥ दा॥ नि॥ ज॥ ल॥
ज॥ न॥ व॥ त॥ रु॥ दा॥ नि॥ पु॥ मा॥ वा॥ द॥ ग॥ क॥ वा॥ म॥ क॥ वा॥ द॥ य॥ स्या॥ कूलि॥ व॥ क॥ क॥ ट॥ क॥ रु॥ म॥ क॥ म॥ ०॥ द॥
ह॥ यो॥ दा॥ हा॥ व॥ हा॥ वा॥ न॥ क॥ सु॥ क॥ म॥ वा॥ ध॥ म॥ ही॥ ल॥ ता॥ ग॥ लू॥ य॥ द॥ कि॥ धू॥ ल॥ का॥ नि॥ हा॥ का॥ ला॥ धि॥ का॥ स॥

५१४॥

म॥ नक पाहु जलो काया सिया रहि जल लोक स॥ मूका सुः ८४ सिया प्रीति ॥ १४ ॥ सा लोका न
सियो ॥ रुद्र गंगा ४ गंगा नखा ४ गंगा मूका जल पुक य ४ रुके म पुक व र्वाह ॥ सा लू न पु व द द
४ ॥ गिली ग पु व दी रु की व र्वाही कमठी दू लि ३ ॥ म रु व स्या सिया लू मी दू न मि दी र्वा की पिका ॥ अ २१
ला ग या ज लो धा ना रु गा गा ध ज लो रु द ४ ॥ आ हा व सु नि यान सी सा दू य कू य ज ला ग थ ॥ य र्से
वा नू प ही कू य ड दू यान नू य सी वा ॥ न मि रु की स्या बी ना हा मू व व न न म स्या य त् ॥ य रु वि ल्या

१४५॥

नुखा ग र्वा दा खा ग न्द व खा ग के ॥ य द्या क व रु गा ग म रु की का सा न ४ स व सी स व ४ ॥ व ग न ४ य ल्व ल
वा ल्य स वा वा पी रु दी र्वा का ॥ ख य नू य वि र्वा धा व रु रु सा य रु धा व र्णी ॥ स्या दा ल वा ल मा वा ल मा
वा या ध न दी स वि ग ॥ त व मि ली ली व लि नी ॥ त टि नी द्रा दि नी धू नी ॥ आ ग स गी दी य व ती स व र्की नि म
गा य गा ॥ ग रु वि रु य दी ज रु त न या सू व नि म ग ॥ रा गी व धी सिय थ गा ॥ गिया ता री आ सू र वि का
लि दी सूर्य त न या य मू ना ग म न स्र सा ॥ व वा रु न म दा सा मा रु वा म क ल क न्वा का ॥ क व ता या स

दानी वा वाह दोसे न वाहिनी ॥ गिरु दु सु गत दु ४ स्या द्विपागा तु विपाट सि या ॥ ग्या ग्या हि
 वप्य वाह ४ स्या कला ल्या दृष्टि मा सा वेत् ॥ स वा वती वगु वती वलु रागे स व सती ॥ का व
 वी स विता ५ न्या ग्या स रु द ४ सि ध स म म ॥ ह यो ४ य सा ली य य स ४ य द वा नि षू गू रु यो ॥ द २८
 विका यी स व यो ३ रु व दा वि द मा न यो ॥ सो ग धि क रु क ला व रु ल क व क स न्धा क ॥ स्या
 दू ल्य ल क व ल य म ध नी ला मू उ म च ॥ ३ दी न न र्वा ल सि न सि न कू मू द के व वा गा ४

लू क म र्वा क न्द ४ स्या द्वा वि य र्गु रु क रु का ॥ ऊ ल नी ली गु णी वा ली व ला थ क मू द्र ती ॥ क
 म दि न्या न लि न्या रु वि सि नी य धि नी मू वा ४ वा यी सि य द न लि न म व वि न्द म हा ल्य ली ॥ स
 रु य य र्गु क म ली ग न य र्गु कू ण ग यी ॥ य क रू रु का म व र्ग सा व र्ग स व सी रू रु ॥ वि स य सून
 ना जी व य र्गु वा रु रू हा गि द ॥ य र्गु नी की सि ना रु ऊ म थ व का स या रू रु ॥ व की ल्य ली का क न
 द ना ला ना ल म था सि या ॥ मृ णा ल सि स म द्वा दि क द म्ब षं गु म सि या ॥ क व हा ट ४ गि रु क

३१४॥

नृक्षकिंजल्कः कसबाः स्त्रियां ॥ सर्वहिकानवदलं वीजका आववाठकः ॥ जूझलतावावि
वीनं नरुनी विन्दुसमुवा ॥ डकं स्वयामिदिकाल धीगदादिसनाश्रुकी ॥ यातालशानिनव
कं वाविषेयीवसङ्गतं ॥ ॥ **वृत्तियातालवर्तः** ॥ ॥ **वृत्तमवासेरुश्रुती** नामलिङ्गानुः २९
गासनः ॥ स्वनादिका ७४ पथमः ४ साङ्गः ७ वसमर्थितः ॥ ॥ **वर्गः** ४ धृष्टीयवद्वारुद्वनी
मभिमुगादिहिः १ नृवक्रकदुविद्वुदेः ४ साज्यायाः ३ विहादिगाः ॥ **रुर्द्धमित्रवला** नका

वसाविह्वरुयामिजा ॥ धराधविर्गाधवधिः ४ श्राष्टीकाकाधयीकिनिः ॥ सर्वसदावसमनीवसधा ॥
चीवसंधनालग्नाकः ४ यथिवीयुध्रीकावनिर्भदिनीमही ॥ ^{वृत्तियातालवर्तः} मृमृरिकायहाकाउसहामत्सा
वमरिका ॥ ^{वीयाताल} डव्वनासर्वसस्यायास्यादूयः ४ कावमरिका ॥ दुषयानूययोदावयाना ^{लीगोमृ}
लीरुली ॥ समानोमनूध्वानोठरिवेलायुरुगसम ॥ ^{वीयाताल} विषयमडागनीलीकानिदूर्ययुवनीजग
नालोकोर्यरावरीवर्षहावावत्यासुयावधः ॥ दहा ४ याग्यकिधः ४ यावाडदीचा ४ पश्चिः

मारुतः १। यत्काष्ठं दहति ॥ स्यात्तद्वा दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 हिमालयादानीं त्वं नयदादहति विषयं त्वं नयदादहति ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 किल ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 किल ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥

३०

लिङ्गः १। स्यान्नदी मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥
 अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥

॥ अथैव त्वं दहति मारुतः ॥

३१॥

वृष्ट्या चाकाका नीव नोदुर्गमं ॥ गवृष्टिः ४ मुक्तागम्यं र्यं टायथ ४ सनननी नन्यनयायनिष्ठ
 र्भं ॥ वृत्तिरुमिवर्गः ॥ ॥ पू४ मुक्तीनीनगयोवा यरुनं यठरुदनी ॥ मुक्तीर्यनिगभा न्यदु यन्म
 ननगवान्युर्भं ॥ गच्छुखानगर्वं ॥ ॥ यथा ४ नमसमागय ॥ आयलामुनिवयायी विद्यतिः
 यत्प्रवीथिका ॥ वथा ४ पुनली विनिखा ॥ यादया ययमसुया ॥ याका वायव ४ गाल ४ पावीन
 यानकावृतिः ॥ रिदि ४ मुक्तीयमं मुक्ती यदनका मुक्ती कर्म ॥ गृह ॥ गदादवयिर्तं वग्ममद्वानि

३२

प३

व

कगर्नं ॥ निग्नकवस्यमदनं रुदनागा नमोदिनं ॥ गृहा ४ र्यं सिवरुन्मोव निकायं निलयातः
 या ॥ वाम ४ कृटादया ४ गाला मरुमं यवनं लिदं ॥ वरु ४ गालं मनीनाहु यर्गुला लाटआदिः
 या ॥ येयमायगर्नं रुन्म वाजिगाला मुर्मदुमा ॥ यादगर्नं गिलियगाला यधानीयगालिका ॥ म०
 गृहादिनिलया गंजादुमदिना गृहं ॥ गर्गगा र्ववायगृह मन्निर्ग मृत्तिका गृहं ॥ वागायर्नं ग
 वाक ४ स्या नं रुया मुक्ती ननायय ॥ रुयादिधनिनी वास ४ वासादादव रुकुजी ॥ सो ॥ वा मुक्ती वा

७

का

जमदन मयकायकात्रिका। सलिक ४ सुवसारुद नैयावकोदथाधिय॥ विरुदक ३ परुदा
 दि रुवकी प्रनमयना। सुगमवैरु रुगामन ४ युवैया दवमाधन॥ गुदाक ३ वमावथ सा
 दह ४ श्रीमममिया। यथावायव ३ लिदा वरिद्राव प्रकापक॥ गृहाव गृहलीदर लीग ६ व
 नवाकिम। अदसादा वृत्तिगिला नासादा वृत्तिगिला॥ प्रवृत्तमनकादो नैया लयकादो नैया
 कक ४ वलीक नी वयटल याक थपटली विदि॥ गायानमी रुव रुसी सुदन वकदा वृत्ति॥

कथातयालिकायानु विटर्कयुनयसर्क॥ सुदादो नैयादीदाव ४ यादिरादि सुवदि का। मात्रा ६
 सुवदिद्रो नैयायुवदां लुगायुव॥ कूटं युवदोत्रियदसि नरवसुसि नथपिषु। कथाटमनवर्गुला
 गदिकं सगर्गलनना॥ आत्राकनं स्यात्सायानं नि। यनि सविना रुली। सैमाजली। गायनी स्या नम
 कनावकवसुया॥ न्दिकमूर्यनि ४ यवर्ग मन्निव ३ न्दिकसर्ग। सैमी सवयथयामो वग्नरुद्रा
 सुवदिद्रो॥ यामाकमूर्यगनी स्या लीमस ३ यिया नरु। यावजू ही नयनी स्या लयका ४ यावः

बालयः॥ मदीयगिरिविन्धारु दहायवववद्वताः। अदिगगुगित्रयेवायत्ता। गोलजि
 लाययाः॥ लाकालेकिष्टकवाल फिकुठमिककूमो। अममुयवमन्धारु ददयः पूर्वप
 वनः॥ हिमवात्रियविविध। मालवानुयानिजागुकः। गंधमादनमंवाव रुमकूटादया
 नगः॥ यायावयसुत्रयावा यनाः। मानः गितादयक। कटाकीगिरिवं गृहं ययागसुत्र
 यारुगुः॥ कटकायुनिगमादः सुः यरुः सानुवदिगी। उत्तः यमवर्णवावि यवाहानि

नैवामवः॥ दवीरुकंदनावासी दवखानविलगुहा। गद्वर्गगुलोलायु युगासु लाय
 लागिग ॥ खनिः हियामाकवः स्या त्यादाः ययक यद्वताः। उयखकादवांमना रुमिनुद्व
 मंविखका ॥ अमुमेनः गितायद गैत्रिकनु विणयकः। निकुजकं जीवाक्कीद लमादिधि
 दिनादव ॥ अतिगोलवगः॥ ॥ अठवां वधीविधिर्न गहनं जाननं वनी मलावधमं वध्या
 नी गृहा नामा मुनिशूराः॥ आबामः स्यादयवर्न कृतिमं वनमवयतु। अमाय गलिकाग

का यवनं वृक्षयाटिकां ॥ यमानां कीकुडयानं नाङ्ग ॥ सावर्णीयं वनं ॥ सादं रुद्रवेषमया
वनमं क ॥ पुत्राचिर्ग ॥ वीथ्यां लिखां वलि ॥ अर्वा ॥ यं किर्त्तित्वा सुभाजय ॥ वनावनसमृद्ध
सा दं कृत्राहितनाहिदि ॥ वृक्षामहीवृद्ध ॥ ग ॥ रवी विटवीयादयस्कृ ॥ अनाकर ॥ क ० ॥
नाल ॥ यलाणी ॥ इद्रमांगमा ॥ वानस्यस्य ॥ रुत्ते ॥ यथा रुद्रं यथा वनस्यति ॥ डोष ॥ रुत्त
याकाका सादं वं ॥ रुत्तग्रहि ॥ रवी ॥ रुत्तावकणीव रुत्तवान् रुत्तेन ॥ रुत्ती ॥ यद्रुत्तान्

三

30

नमो रुद्राय श्याकाणविकवसुदा॥ रुद्रायैव विकर्मिण्युववेयादयस्त्रिषु। सनमोनादु
वर्णवर्कस्यगारुतानिगिरु॥ रुद्राय॥ अथका। सुमन्त्रगुत्मी। वन्नी। पुत्रममिन्नेगा। नगायः
गानिनीवीन। इन्निन्यलपठ्ययि॥ नगायानादुदुय। उल्लय। अथययस॥ अथीय
का॥ उ॥ रुद्राय॥ नृना। रुद्राय। धमना॥ समं गारुतानिगिरु॥ रुद्राय॥ नगायः
गानिनीवीन। इन्निन्यलपठ्ययि॥ नगायानादुदुय। उल्लय। अथययस॥ अथीय

मावामजायमोत्तंकी वल्लवत्तलमसिधिया ॥ काष्टं दार्ष्टिं वनं लव ॥ ॐ धममं ॥ यमिन्दि यानि
 निष्कुरु ॥ काठं वाना वनविमं ॥ विदियो ॥ ययं यल्लगं वुदनं यल्लं यल्लं वुद ॥ यमान ॥ यल्ल
 वाकुकिमल्लयं विस्काविटयाधिया ॥ वृक्षादीनां रुतं सयं वृगं यस्य वयं वनी ॥ आमेरुल्ल ३१
 यल्ल ॥ ४ ॥ द्य ॥ क्वं वानमुरुदिय ॥ कावकाजालकं क्रीव कलिकाकावक ॥ यमान ॥ द्य ॥ वुद
 कमुकवक ॥ क्वं यल्लामुक्ताधिया ॥ दिय ॥ यमनं म ॥ ययं ययनं क्वं यमं यमं ॥ मेकनं य

योगुरुल्ल ॥ यं सी गसिधुगिनिर्धरुय ॥ आम्भोजकर्जनाल्लो द्य ॥ वीका ॥ ० ॥ वुनिकावक ॥
 य ॥ द्य ॥ यानयानाथवगस्य ॥ यथा ॥ ययं ययं विल्ल नीगवानी वयं रुल्ल ॥ ४ ॥ द्य ॥ ययि
 याम्बुवगस्य ॥ गारुजं नगिगुमीन्नु गं वकादीयमायका ॥ वकासोमयुगिय ॥
 य ॥ यमो ॥ विल्लगाल्लिय ॥ लेल्लुमी माल्लुवशीरुल्ल वयि ॥ वृक्षाजटीयकटीया
 ॥ गाल्लव ॥ गायवालाय सिवीटसिल्लमाऊनो ॥ आम्भुनात्रयाल्लो यो यरु

वृकयुक्थियकशीयका॥ मातृसृजकायाश्च कर्णका॥ सस्यसंवव॥ नदीसर्जवीनमृ
विद्व॥ ककुराशन॥ बाजादनरुत्ताकुन्दकीनिकायमिथदया॥ ॐ हुदीगायसगवृ ३८
यममृदुत्वयो॥ पिच्छितायुवलीमाया॥ सिन्धाय॥ र्गन्मलिर्दया॥ पिच्छुगुणाल्लीयष्ट वावन॥
कूटगाल्मलि॥ विनविन्धानकमात॥ कर्बजथकर्बजक॥ यकीर्य॥ युनिकवज॥ केलिकाव
क॥ युनिक॥ कर्बजरुदा॥ मयुं॥ था मर्कट्यगाववन्नवी॥ बादिनादिनक॥ श्रीरुगमृदाठिमयू

यक॥ गायत्रीवातननय॥ खदिनादनकवावन॥ अजिमदाविद्वदिनकदव॥ खदिनसिक॥
मामवल्कायथवायुयुक्कृणंयव्वदसकी॥ एवउडवृकथवृकथिगुकथय॥ र्ययू॥ र्यः
वाहुलामुवदमानवाग्वका॥ अल्यागमीगमीव॥ र्या॥ रूमि॥ सुरुलानिवा॥ पिणीनकाम
वृवक॥ यमन॥ कवलाटक॥ गल्यथमदनगक॥ यादय॥ यानिरुदक॥ रुददावृदुकिनि
म॥ पीनदावृवदावृथ॥ युनिकाष्टयसकसू॥ र्ववदावृथथदया॥ याठलि॥ याठलाभाया॥ का

यस्तुलीरुतब्रह्म॥ कृष्णवृक्षाकृष्वनाकी ग्यामागुमदिमाकया। लमागुवदनीगुंदा। श्रियञ्जु ४
 रुतिनीरुती॥ विष्वक्नागं धरुती कारुण्यप्रियकथया। मण्डुकयज्ञयगाधु नटकद्वन्द्वद्व ३
 का॥ धानाकणुकनायक दीर्घवृक्षकृष्टनठा॥ गामकध्वनलोतिव्य रुतीत्यामलकीविष्णु ३२
 अमृतायवयस्त्रय गिलिज्जुविहीनक॥ अकसुय॥ कर्करुता रुतवाय॥ कलिदूम॥ गुरु
 यात्रवधायथा तयस्त्रयगनामृगा। रुतीगकीदेमवगी वगकी। प्रयसीनिवा॥ पीतद्व॥ स

रुतदया

वल॥ युति कारुण्यथवमान्यल॥ कर्षिकान॥ यत्रिवा॥ लकृवालिद्ववागुद॥ यतय॥ क
 ठकिरुता निचुलाभूज॥ कलि॥ काकाद्वनिका रुनु मेलयुजयनरुता॥ अत्रिद्व॥ सर्वगारु
 दहिमुनियोममालका॥ यिद्वमद्वधनिधय यिद्विलागुवृर्णिगया॥ कयिला रुमगरुता
 गिबीषमुकयीनन॥ रुठिला यथयामय यथयकारुमययक॥ एतस्य कलिकागीव रुती
 आदयकसन। वकलावृरुतागक सभोकनकदाहिनी॥ यथय॥ कयवानाग कसन॥

१३

कायनाक्षयः। जयाजयनीमकीनी नादयीवेजयनिका॥ श्रीयर्धुमायेर्मथः॥ कालिकाग
 लिकात्रिका। जयाथकटजः॥ गङ्गा वसकागिनिमलिका॥ पतयेवकलिङ्गस्य यवरुदयवः
 रुतः। कृष्णयाकरुताविम सुयदाः॥ कनमदक॥ कालस्य वसुमालः॥ कायिधुयाथसिधुक
 ॥ मीदुवावसुत्रियो निरुंठीयालिकस्यदि॥ वलियवागवीदव गाठाजीमृगवृषयि ।
 श्रीरुमिनीरुरुनृषी रुतगुल्यां उमलिका॥ रुयदीगीरुकी वरु सेवा शुभा वनाइवा॥ गरा

५०

लिकायुसुवदा निरुंठीनीलिकायसा॥ सिताशोष्ठसूत्रसा रुतवर्ग्यथमागधी। गलिकायुधि
 कामरा सायीगादमयुधिका॥ अग्निमूकः॥ यंयकस्या दासनीमाववीलगा। सुमनामालगीजा
 निः॥ सयलानवमालिका॥ मायाकुंदवकुकुदुर्वुकावंधुडीवकः॥ सदाकुमावीमवलि वझा
 नमुमदासदा॥ रुतगुल्यां वरुवक रुतगीरु कुर्वटकः॥ नीलासिंघी द्वयाद्यादा दासीचारुगल
 थमा॥ सेवीयकयुसिंघीया रुमिनकुवकावृणा पीगावृनगुंकासिंघी रुमिनसुदवनीदया

५१

॥ डाण्डयर्थं किल स्य यत् । यत्नि स्यात्तस्य स्यात्तस्य यत्तु । न ह्यस्य मात्रकाः ॥ कनवीवकवीवक ककन
 ग्रंथिलावृत्ती । डन्मरुः किंवा धृत्वा धृत्वा नः कनकाकृत्यः ॥ मातुलामदनश्च रुतमातुलतयुग
 कः । रुतयूवावीजयूवा वृचकामातुलंगक ॥ समीन (गामनवकः) प्रकृत्युचः रुतिभक्तः ॥ ३१
 वीवायथयर्णस कठिन्नक (० वकी) ॥ सिक्ककानुपाठीतु विरुकावद्विर्गकः ॥ प्रकृद्ववसु
 कामुन मलवृयविकीनकाः ॥ मन्वानश्चक्य (पू) पुक्कतक्यगायसो । निवमन्नीयागुयन

४१

पकाष्टीलावकावसुः ॥ वदावृत्तादनीवृत्त नृदाजीवनिक्कययि । वत्सादनीचिन्नवृत्ता गुरुची
 मलिकामृता ॥ जीवनिक्कासामदन्ती विगत्यामधूयर्थयि । मृदादवीमधूवसा मावटागजनीयु
 वा ॥ मधूलिकामधूधली (ग) कलीयीनूयर्थयि । या० न्नाष्टाविद्वकली स्रवनी (प्रयसीनया) ॥ ३
 काष्टीलायायवली यायीनावननिकिका । कट्टकट्टरुवा (ग) क बाहिणीकट्टबाहिणी ॥ मत्स्यायिका
 कृष्णरुदीयकाष्टीगकलादनी । ज्ञानगुफजज्ञावांश कट्टबायावृथायली ॥ मयथाकाष्टुकनिमिः

कथिककृष्णमर्कटी॥विनायविनाय्यायी॥इवनीर्णवनीवृथा॥यस्यक॥धलीसुताधलीनभुसूवि
 कयर्णयि॥अयामार्ग॥नेखविका॥वामार्गवमयूवकी॥यस्यकयर्णकीनयर्णकिलिहीखवमंज
 नी॥रुंजिकावाधलीयदा॥हार्गीवाधलीयदिका॥अज्ञावतनीकोलय॥कवर्णववर्णका॥मंजि
 हाविकसाजिगी॥समझकालमयिका॥मलुकयर्णरुणीवीरुंठीयाठनवन्तयि॥यासायदाः
 साइस्य॥वन्तयास॥कृनागक॥॥वादनीककृवानका॥समूडाकादूवालेहा॥पुनियर्णपु

५२

थकयर्णविषयर्णयिर्णका॥काइविनायिर्णयूची॥कलसिद्धावनिर्णका॥निर्दिकावस्युणीवा
 धीवृदनीकटकाविका॥यमादनीकलीकडा॥द॥स्य॥वाइकययि॥नीलीकालाक्रीनकिगा
 यामी॥मय्यर्णका॥वंजिनीधीरुलीकडा॥रुलीकालावनीलिनी॥अवन्नुज॥सामनाजी॥सूव
 नि॥सामवन्तिका॥कालमसीवृषुरुला॥वाकूचीयूतिरुन्तयि॥कृष्णयकृष्णवेदही॥मागवीयय
 लाकला॥डववायिधली॥नीर्णकालाथकविधियली॥कयिवन्तीकालवन्ती॥यययीवसिन॥

पुमान्॥ चर्वांशुयविकाकाक विंवीगुंउकुवृत्ता॥ पत्तंकवालिङ्गर्गका श्रुदंकासादूकंठक ॥
 (गार्कंठका) गार्कनका वनगुं गार्कंठक्यपि॥ विष्ठाविषाययनिविषा निविषाययविषावृत्ता॥ गृहीम
 होषधंवाथकीवावीदुष्टिकासम॥ गममूलीवदूमना हीवृन्दिदीवनीवनी॥ मयायाकाहीवृयणी ४३
 नावायल्य१ गमावनी॥ गृहवृन्थयीगदूकालयकदविडव॥ दावीयवयवादावृ रुत्रिडाव
 र्जनीयपि॥ ववायगर्गकासपुंथा॥ गालामीगकयविका॥ गुक्कादेमवनीवेय मारुसिंशोवृवाग

कावृवाटवृव१ सिंहाया वायकावाजेवनक ॥ गृध्रागिनिक्कणीया द्विपूकाकायवाजिमा॥
 वृकृर्गकागुकांशुकाकिल्लाककनकवा॥ गालय१ ग्राहीगनिव गृहामधुनिकामिसी॥ मिष
 यायथसीदंठा वदद१ सूकमूदीगुता॥ समरदृग्वा (अदन्त ममाद्याविगुनगुला॥ गंदूलथः
 कुमिष्यथ विउङ्गयूनयूसकं॥ वलावाद्यालकाद्यंठा ववागुणाययिका॥ मृहीका (गार्कनीडा
 का साहीमधुनयमिच॥ सर्वानरुनि१ सवठा गियरागिगुगादिवृग्॥ गिरुलीववनीन्यामा

पानिथो सुसविका॥ कालामसूत्रविदला द्रव्याकालमविका॥ मधुकंझी मकंयष्टि मधुकं
मधुयष्टिका॥ विदानीकी नमुकक गंधाकाही वयासिना॥ पुन्याकी वविदानीया नमदाशेनक
नीविका॥ लाझली गात्रदीमाय विचली गकुलादनी॥ खनाशका नवीदीया मयुनाला वमसू ४४
क॥ गायीगा मासात्रिकाया दनकात्यलसात्रिका॥ याय मुदिष्टिदिल्लो वृद्धनया दया
वृम॥ कदवी वानवावृशा वंरामावी उमरुला॥ काशीला मूझयली उ काकमूझा सदयवि॥

वार्ता कीदि गुली सिंदी रुंठाकी दुष्टवर्षिणी॥ नाकुली सूत्रमानाग सुगंधागंधनाकुली॥ नक
लहारुजंगकी दृष्टाकी सूत्रदावसा॥ विदात्रिगंधाहुमनी सातयली सिवाक्या॥ रुंठिक
नीयमूझाका कयासी वदनी निव॥ रुंठाकी गुसावया गृही गुमयका वृष॥ गम (इवकी
नगवला मयादका गवंधका॥ वामा गवाथायक्या नमदाजाली सयीनक॥ ओस्त्री यटालि
काजाली नादयी रुमिजं वृका॥ याला झलि आगिनिखा काकीगी काकनायिका॥ गम आयदी

युष्मावदा मृगलीनांतमूलिका। षुजगृगीविषालीया। (महिष्कादाविक्रमम्) ॥ गोलवन्नीनांव
ली। नागवन्नीयाथद्विजा। रुक्मगुणवल्काकोनी। कयिलारुमगमिनी ॥ पलवाल्कमेतयं मृ
गीविहविवाल्क। वाल्कं याथयालंयां मृकन्दः कृन्कन्दः ॥ वाल्कीववर्दिष्टादीशंकः
नीमनामय। कालान्मोयवृद्धाभ्ययशगीतलितानिष्ठ ॥ गोलयंगानयणीयु देवार्गवकुटी
मृगा। गमिनीगजरुक्काशु मृवदायुवरीवसा ॥ मरुवल्कावृदित्रिकी। मन्त्रकीकादिनीमिच

५७

मृमिहोलासुरिकुशुभनकी। धादुयुषिका ॥ पृथ्वीकायन्दवालेला निष्कटिर्वदलाधसा।
मृन्मायकयिकानन्द कावर्ग। मियुदागुठिः ॥ वाविः कर्षयाविरुग्गं वाय्यं याकलमय
ली। गंखिनीयावयुषीया। कलिन्यथविशुन्नकः ॥ मटिमला मटागाली। मिवातामलकीमिष्ट
व। यष्टोपुनीकंथोय मथयुन्नः कृवन्नकः ॥ गुमिकवृः काकलका नन्दीयुक्ताथवाकसी
वृणवन्नदनीकम दः युगगदासका ॥ वाशायुर्ववायुनर्यं कर्बर्गं वकुकावर्क। सूचिः

नाविदुमलता कयागीचिर्नदीनली॥ वमन्यजनकणीय रुनरुदविलायिनी॥ गकि१ गीय१
खन१ काल दलनरयमथाठकी॥ काकीमृत्तायुविका मृकालकसूनाहुअ। कटनरुदाग
युन वानरययत्रियलव॥ द्रवागयुनमानद केवलीमृककानिय। यथियर्लुकेवदे१
युर्थीहोलायकुकुन॥ मनुनालाहयिपुमास्यकादवीलतालय१। समुदातावयु१ कादिव
सोलीकाधिकययि॥ गयसिनीजठामासी जठितालामामिसी। लयसुं सुकटं रुई लव

४३

यार्थवनाइक॥ कयुनकाडाविठक१ कालकाथयमुखक१। ठाय। आगामिमाणस्य वजाकोय
वेमोयव॥ गाकाखीयययुआदि नंदलीयाप्रमात्रिय१। विगल्यागिगिखानका रुलिनीगयुः
युआयि॥ सादुकागीधरुगली श्रावगीवृद्धदावक१। ई। गावादीगुमल्यादी वयस्यमामवकु
नी॥ यदुयणीहेमवली सलुकीनीदिमावनी॥ रुययुकीगुकावाजी माववणीमहायदा॥ रुडि
कनीवृकिकादक ग०। मृदासुलातिका। मरुयवधीवृकासु वगय१ गतवधायि॥ नमस्कात्रीः

गलुकाती समझायदि नययि। जीवनी जीवनी जीवा जीवनी यामयुषवा॥ दूर्वही प्रोमयुव
कः ॥ गृगदसी गजीवकाः॥ किमन किंकरुनिमो नार्यनिकाथमयला विमला गाला रुवि
रुतावर्मकयययि॥ वाययानी सादुनसा वयसुथमकलकः॥ निर्वृरुदनि काययक ॥ ५५ ॥
दुम्वययययि॥ अजमादगुगर्गवा वयगरोयमानिका मूलयुयवकाभीव यदययगालिथो
यव॥ अथथानिवनायया वावटीयदवाविनी॥ कयित्यः ककगार्थं दवाका गवावनीय

यि॥ ययनटसुगजा ददुप्रकमदकः॥ यद्वोटडनवाखय यतां सुसुयकंदकः॥ लगार्क
दुदुमोगय दविमथमदोयव॥ लघुनं गृजनाविह मदाकन्दवसानकाः॥ यूननवाहुण
थयी विहुनं सुनिषगुर्क॥ साद्वानका गीमलाय वाजितागनर्थयि॥ वावावनीयिः कटरी
यि॥ अमियागीलगा॥ वाविकं ययमावासा कायनी वलरुडिका॥ विषयनयियागृहिर्वा
वादीवदवययि॥ माकवा रुद्रवाजः॥ सा कमायीदुवायसी॥ गाययामिरवृणा निवृणा

मय्यामिमिषि॥ अवायुषीकाववीय मनस्यसुषमात्रिणी॥ मय्याकुरुं रुनामाज वलारुडवल
 निव। जनीजगृकाजननी जगुदुजकवरिनी॥ सयर्गथगडीगंय मूलीयडुं थिकययि। क
 र्यवायियला। मयि कावधनु॥ कटिल्लक॥ मुखवीयाथकलकं यटातल्लिकक॥ यद॥ कृष्ण
 पुकमुककाव विवाव॥ ककटीमिपो॥ वृद्धाक॥ कदुगुमीयाक गुंयालावडरुसम। वि
 गगवादी। मयुमा विमालाविडवानुली॥ अ॥ मय्य॥ सुनव॥ कंदा गंठी नमुसमठिना।

४८

मूलंयुयादिकाकुं मूलकंदिल्लमादिका॥ वायुकं॥ करुदा॥ मय दूर्वागुगनयविका। सद
 प्रवीयारागयो वरुननकाथयायिका॥ मय्यामीनगवीयाव म॥ मलीनकलाकक॥ कन
 विंवाभुधनामा मसामसकममिया॥ मय्यइदमसकागुंडा वृजलावकलावडा। वी। गलका
 नकमोन लविमववृज॥ मय्यववायवरुला वलमसकनगजना॥ वलव॥ कीवकासु
 मय्यसमननानिलादगा॥ मयिनीयववयवपी सुंदरुजनक॥ मय॥ नडदुधमन॥ याठ ग

ला॥ थाका ममिदियां॥ अरुयमनतदंय ममृणल्लतागयी॥ लामऊकल्लयुल्लय मवदादु
 काय॥ नल्लदयसुंमम न्मासाकयमखा अयि॥ अयिदुंमृ॥ थदरु॥ यविममथकरु
 ही॥ योवमोर्गधिकवामदवडुमृकनोदियं॥ द्वागामिदुंयान्तधो॥ मालागुणकरुसु॥ ५॥
 शर्यवाल्लरुणीयासा यवमृरुणमऊनी॥ रुणनीमंयतिमृथा नशरुनरुमंयति॥ रुणनाजा
 कयमृल्ल नालिकनसुल्लाली॥ धांदादुवृग॥ कमका सुवाक॥ खयवनायु॥ रुल्लमृदगम

५०

मव दिंताल्लमदिगासुय॥ खरुन॥ कमकीगाली खरुनीयरुणदुमा॥ नुतिवनीयविवर्ग॥ ॥
 सिंहामृणल्ल॥ यंवाथा रुयंरु॥ कमनीरुवि॥ गार्दलदीयिनोयायु गवदुसुमृणदत॥ वन
 रु॥ मृकनायु॥ काल॥ पाणीकिवि॥ किटि॥ दंढीयाणीसुवनामा काशरुद्वानल्लययि॥ कयि
 ॥ सवडु॥ सवग गाखामृगवलीमखा॥ मकटावानर॥ की॥ यनीकाअथरुल्लक॥ मकाकुरुः
 ल्लाल्लूका गणुकखरुवज्जिनी॥ लल्लायामदिधावाह दिवकासवसेविरो॥ मियांमिदारु

त्रिमाय। गमायमृगवृकाः॥ मृगालवयककाद् रुवृवववजं वृकाः॥ डाद्विद्विजलामाजो
 वा वृषदं गकजुखरुक॥ गथा। गो। धन। गोक्षत्र। गो। वया। गो। त्रिकोत्तम। गो। विरु। गो। ल्याम
 क्षामि गलली गलली धर्त॥ वाग्यमीवोरुमृगः॥ काकलीहामृगवृगः॥ मृगकूनद्ववागा ३०
 यद्विषाजिनयामयः॥ वे। लायम। धा। शमायम। लायम। मरुगिय। कदलीकंदलीवीन
 मृगयियकावयि॥ ममृवृ। श्रितिरुत्रिषा। जूमी जूडिनयामयः॥ कृष्णानववृनयं वृवृवृवृवृ

मोदिषाः॥ लाकपूयुषकोलस्य नाहिताश्रमनामृगः॥ गोधवृ॥ गनरावामः॥ सुमनागदयः॥
 लागः॥ लूरादयामृगालाया गवायाः॥ यजुजातयः॥ इंदुनमृषिकायायु गिरिकावालमृ
 षिका॥ वृद्धद्वीगंधमृषी दीर्घरुद्रुदियायिका। सवटः॥ ककलासः॥ ला। नयली गृह। गो। वि
 का। लूरा। दु। मनुवाया। गो। मासमकटकाः॥ समाः॥ नीलाङ्गुलुमिकुलु जलोका। गययुरु।
 वृष्टिकः॥ गृककीटः॥ ला। दलिदु। गो। वृष्टिक॥ या। वावराः॥ कलजववः॥ कयाका धगा। दनः॥

यदीत्यनडलूकडुवायसावागिधवकी।यायाठ॥साइनदाअ॥खंडनीटमुखंडन॥सा
 वृष्टमुकंक॥सादथवाअ॥किकीदिवि॥कलिङ्गुरुधूमाटाजुथसायुगयुक॥दावाया
 टाथसावड्गुकाककागक॥यसा॥कुकवाकुकमवृ॥कुकटथनगायुव॥वठक॥कल ३१
 विंक॥साकसायीवठकानथा॥यूमयथावाटकेवकुयथयवठकेवदि॥ककवट॥कवट॥
 साकुककाकनीसमी।वनधिय॥यकुरु॥काकिल॥यिकुरु॥ययि॥काकुकनटावि

वलियुदसकृत्यजा॥धर्मात्मधापववरुदलिरुग्वायसाजुयि॥डावाकाकुककाकालादायु
 रु॥कालकंक॥अगायिविज्ञोदाकथगुयोकीवकुकोयमी॥कुकुकीवाथवक॥कंक॥व
 यवाकुकुसावस॥काकथकथकवाकावथाङ्गाकयनामक॥काकम॥कलईम॥सादका
 गकननीसमी।ईसासु।अनगवृकथकाङ्गामानसीकस॥वाकईसासुनयवृचन।लोहि
 रें॥सिगा॥मलिनमलिकाखासु।आरुना॥सिगनवे॥गवाविनादिनामिथवलाकावि

सकीठिका॥हंमस्ययाविद्वददासावस्ययुल्ल॥१॥अथकाजिनयवासायथावृत्तयथायि
 कावर्चलामन्त्रिकानीलासवद्यामधुमन्त्रिका॥यतद्विकायुहिकायाद्वद्वयनमन्त्रिका॥दं
 गीमजागिबल्यायाइन्नालीववदाद्वया॥१॥रुद्रावीमीवकायीवीमिल्लिकायसमांमा। ३२
 समीयमङ्गलरोखयागाशक्तिविद्वा॥मधुवगामधुकवामधुलिधुव्यालिन॥द्विवरु
 पुथलिइइषयदरुमवालय॥मयूवावर्हिषावदीनीलकं०अथअथक॥गिरावत॥१

गिरीककीमयनादानुलास्ययि॥ककावालीमयूवसासमोयंदकमयको॥गिरावृणागिरव
 उम्पुयिद्ववदनयूसक॥खगविर्दगविद्वराविद्वद्वविद्वायमा॥गकनियन्दिगकनिग
 ककगकनदिजा॥यकनियगयगगयगत्यगनथा॥उजा॥नगोकावाजिविकिनविविचि
 नयकगय॥नीणाइवागवमन॥यित्तकानरुमंगमा॥मवाविगयाहानीगा॥महु॥कानः
 उव॥प्लव॥मिदिनि॥कूकूहलावाजीयजीवथकावक॥कायद्विकसिद्विरुकावककावः

हिंकादयः॥ गवत्पुत्रकृद्गुणायुर्गुणमर्तव्यमनूवहं॥ मृदयान्दिगिः॥ यन्ममूलं यन्वृद्धाटिबृहद्विद्यो॥ य
 तीनाशुनसंतीना न्यासाः॥ खगगानिक्रियाः॥ यलीकाः॥ हिदीनर्तु कलायानीरुममिर्या॥ यानः॥ य
 कारुकाणि॥ रु॥ यथुकाः॥ व॥ गि॥ रु॥ मृदयं सोमिथुर्मददं यन्मन्तुयगल्लयुर्गं॥ समूहनिबद्धयू
 र्यदाहविमन्नवजाः॥ मृमोयनिकववागवावसंवागसंययाः॥ समूदायः॥ समूदयः॥ समूदाय
 यथागाः॥ मिर्याः॥ रु॥ मृदयं निवृन्दं निवृन्दं कदम्बकं॥ वृन्दरुदाः॥ समेवर्गः॥ संयसाः॥ योऽनुजन्तुः॥

सजातीयोऽकृत्तयुथं निवर्त्तयुनयुसकं ॥ यद्वृत्तांसमजान्तेषां समाजार्थसवर्मेणा। स्यान्निका
यऽयुंजवाजी गृत्कवऽकृत्तमधिर्या ॥ काथान। लोकमायुवनेह्निवादीनिगङ्गा। गृत्तसकाऽ
यकिमृग।। गृत्तकासुगृत्तकाश्वन ॥ वृत्तिसिद्धादिवर्गऽ ॥ मनूयामानूयामयो मनूजामान
वानवाऽ। स्युऽयुमांसऽयुश्चजनाऽ। युनूयाऽयुनूयानवाऽ ॥ युधिषाविदवत्ताथाषा। तावीसीम
नितीयवृऽ। यमीयदगिनीवामा। वनितामदितानथा ॥ विष्टवास्वंगनारीवृऽ। कामिनीवाम

लावना। यमदामानिनीकाका ललना यनिरुमिनी॥ सुन्दरी वसली वामा कायना सेय रुविनी॥
 यना दादु मरुकाणि नुरुमा वर वरिनी॥ कृता रुष काम दिवी रुगिना नानु यस्त्रिय ४।
 यत्नीया विगुदीनी वरिनीया यरुधर्मिणी॥ रायो जाया थरु रुमिना वा ४॥ सुकु कर्द विनी॥ य
 रं वी सुत्रिणा सु मनीसा यत्तिका थुटा विविना थरु यं वना। यनिम्व नाय वर्या थ कल मु कल य
 लिका॥ कन्या कु मीनी गो वीरु नग्नेका नागता रुवा। स्यान्मथ मा दृष्ट वजा सुवृणी युवनि ४ सम॥

३७

समा ४॥ सुवाजनी वर थिनिंटी सु सुवासिनी॥ सुन्दरी कामका स्या दृषयनी रु कामकी॥ काना
 थिनी रुयायानि संकर्म साहिसाजिका। युं थली थरु वी रं थ सु मनी कल टल वी॥ से विधीयां थुः
 लावया दधिनी गिनु ना विना। सुवी नानि यति मुना विगुम विथ व सम॥ गुलि ४॥ सुखी वय स्या
 व यति वकी सरु रुका। वृद्धा यति द्वाया झा रु य झा य झा रु थी मनी॥ धूडी गूड स्या राया स्या द्वा म
 जाति व व व। श्री वी रु म हा गूडी जाति यू या गया ४॥ समा॥ गुया वी सुय मया स्या रु कलिया रुणि

यात्थिडयाथायाय्यायायीस्यादावायोपिचस्रन॥आवायोलीडुयुयासायादयोद्वितीयीन
थाडयाथायाय्यायायीथाटासुयीसलक॥वीनयत्तीवीनरायोवीनमानाडुवीनसू॥आना
यस्यायजानाययसृनाययसृनिका॥सुननिकाकाठवीसाइसीसंवाविकसम।कायाययद्वयुका ३३
याकायायवसवाववा॥सेवंधीयनवभसूस्ववगानित्यकानिका।अमिक्रीयादवुदायाथयानक॥
यनयानिणी॥वाजसुगलिकावयावृयाडीवाधसाजने॥सलुटावावमूखायाल्हनीनीरुली

सप्त॥ विष्णुशिकान्दीकलिकादेवहूधनजसल्ला॥ सुधर्मिन्धविवाहयीमलिनीयुधवस्ययि॥ स
हमययदयाविष्यादुजयुधमार्कव्य॥ शुद्धाल्दोददवतीनिष्कलाविगतारुहया॥ जूयनसः
त्वास्याउर्वेधनद्वन्तीवर्गहिणी॥ गलिकादसुगालिर्वासाहिर्लीयोवर्गगा॥ ६॥ यूनरुदिविषू
बूदादिसुस्यादिविषूयनि॥ सगुद्विजायदिविषू॥ श्वेदयस्यकदस्तिनी॥ कानीन॥ कन्यका
आन॥ सगोथसुहृत्॥ सून॥ सोरुगिनय॥ स्यात्वा॥ न॥ लयसुयनक्रिया॥ येरुश्वयय॥ स्यात्वा

येह सवीयथयिरुयसु॥सुतामारुयसु॥थेर्वेमागुयाविमारुज॥अथवीथकिनय॥या द्व
यलथयसीसुग॥कीलथय॥कीलठनो॥रिक्कीयुसगीयदि॥नदाकीलठिनयाया॥कील
ठमायिवात्मज॥आत्मजकनय॥सुन॥सुग॥युगकियसमी॥आदुर्दुहितर्वसव॥अथर्वभाकन ३३
थासम॥सुजामलोवसावधो॥नामकुजनक॥यिगा॥जनयिगीयसुमना॥जननीरुगिनीससा
ननन्दाकुससायसु॥नेयुयोनीसुगात्मजा॥हायोउरुवरुवगीस्य॥यागव॥स्य॥पवस्यर्व॥यजा

वगीरुजाया॥मागुलानी॥गुमागुली॥यनियत्वा॥यसू॥अथ॥अथुनमुयिगागया॥यिरुजाया
यिरुवा॥या॥नारुजागागुमागुल॥॥साला॥स्य॥कोनव॥यत्वा॥सामिनादवृधववो॥सवीयाका
गिनय॥या॥आमागादुहिगु॥यनि॥॥यिगामरुयिरुयिगा॥गयिगाययिगामरु॥मागुमनामका
अर्व॥सयिगु॥सुसनारुय॥॥समानादयसादय॥सगस्यसुजा॥समा॥॥सग॥गुवाधिवह्नामिर्ववू
ससजना॥समा॥॥ह्नामयर्वधुगागर्वा॥कमाडावसमूदया॥॥वव॥यिय॥यनिरुर्हो॥जावमूययनि॥

[illegible]

दोविशमाजना। स्यादलानसयाठिंरा सनयावसनं वयी॥ वान्तमुसमानानवका वयसुसन
 लायता। यवया४ सुविना वृद्धा जीमाजी। भूजननयि॥ वयीयान्दगमी आयात् पूष्टजस्रयि
 थाग्रज४। जयन्यजस्र४ कनिष्ठ यवीवायनजानजा४॥ अर्मासाद्वल्लुगा वल्लयनर्मा
 संला३ सुल२। सुंदिल सुंदिक सुंदी वृद्धु कृद्धि४ यिथिलुत्त४॥ अयर्मीटा वनारु अ वरुमा
 नठ नासिक। कणय४ कणिक४ कणी वनिना वनिरु४ समी॥ विकला इह यागं४ स्वयो

[illegible][illegible]

[illegible]

नकः सैयुक्तः पतिप्रदः यत्नद्वयः। यसावनीकं कनिका विष्णुतः यत्नवासकः॥ दयोलमयः
नादोलो यत्ननं गान्तवृत्तकं॥ वृत्तिनवर्गः॥ ॥ सक्तमि। ग। गुजनन कलान्यरुजानान्वयो। वी। ग।
नववायः सक्ताना तर्जुः सप्तः वाद्यः॥ दयः॥ विषयकृषियविट्गूडे प्रागुर्वधमिति सप्तर्जः। वाजवी
जीवाजवी। वी। सप्तकलसं रुवः॥ मका कलकलीनार्य सप्तसक्तनसाववः। वद्यवावी गृहीः
वानसप्तः। रुवः प्रमुदयः॥ मृदुमाः मृदिजायय जलरुदववागुवाः॥ विषयः प्रवाद्यः॥ सोष

६ कर्मयोगादिक्रियेन ॥ विद्वान्वियस्यिदा ॥ ४४ ॥ ससूय ॥ काविदावय ॥ श्रीनामनीवी ॥
 ४५ ॥ सखावानयति ॥ कवि ॥ ४६ ॥ धूर्वामानसुवि ॥ कुमीकुष्टि ॥ लेखव ॥ धूर्वाविचक ॥ ४७ ॥ इवदः
 ४८ ॥ दीदीयदनी ॥ ४९ ॥ विच ॥ ५० ॥ नदीसमी ॥ ५१ ॥ इव ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

नक्षत्राणां सप्तमं दक्षिणं ॥ अनुनामः ॥ यवयव न साङ्गवीती गुवायुयः ॥ लवानुः ॥ समायुः ॥
सत्त्वान्तरि यवकृतं ॥ द्युगान्तरि वापि नो निश्चयः ॥ याथमकन्तिकाः ॥ एकवद्वेनावावा मिथ
॥ सवद्वेनावावा ॥ समीपं ॥ एकगुणवद्वेनावावा मिथ ॥ यावयथायद ॥ लवानुः ॥
अमितिहाय्य ॥ उपरुः ॥ लानमायं ॥ लान्तावमुपयकमः ॥ यः ॥ सवाववायागः ॥ सवतनु
मयः ॥ कुतः ॥ या ॥ ० ॥ मयतिथीनां सवयानयनीवलिः ॥ एतयं यमहायः ॥ वद्वेनावावा

मका॥ समस्ययत्रियङ्गाष्टी सनासमिसंयद॥ आसुनीक्रीयमासुनं सुनयंसकथा॥ स॥
 वाग्वंग॥ सायविगोहा सदायाविधिदर्शन॥ सहासद॥ सहासुता॥ सहा॥ सामिजिकाश्र
 न॥ प्रथयुं प्रारुकागा वायश॥ सामिद्विद॥ कमान॥ ज्ञानीयुयावनेव्यायो मविजायायका
 थन॥ यदि॥ यत्रिसुगुरुमि॥ समसुं छिन्न वलत्रे॥ यवालायुयकदक॥ कंवासुगदनावृ
 ति॥ यूयायुं नमनिर्मथ अदावृत्तिवलिद्वया॥ दक्षिणाग्निर्गर्हयथा रुवनीयोग्या

३८

मय॥ अग्निगुयमिदं न पलीक॥ संसुगानल॥ समृध॥ यत्रियाथाय वायाव (मोयथानि
 ६॥ यागमदयथादानीय दक्षिणाग्नि॥ यलीयन॥ नसिन्नानाथाथागायी साहायदुरु
 थिया॥ ममासिधनीयथायथायादमिसमिधन॥ गायत्रीयमूर्खं द्वा रुथयाकववृ॥ य
 मान॥ अमिन्नासागृणा॥ अयादीयसाद्विथागन॥ वृविर्गुं यजुर्नगय दविर्गं मृगयम
 ॥ येवदार्थसदथा अयवमानं गुयायस॥ रुवाकवादेवयेग अन्नयार्गं युवादिकं॥ ६

वायुरुज्जुनोऽनुष्वारुदाऽयवऽश्विऽ। डयावृत्तऽयगुत्रसोयाहिमन्नुक्तोऽरुगऽ॥
 यत्रंवावाकंमनंयादुलीयवधार्थकं। वायानिज्ञऽयमीमायसंयन्नधादिगादुर्गं॥स
 न्नायंरुवित्रान्मोडुर्गंविषयवद्गं। दीक्षाकावरुथायङ्गुत्तमादुत्तयङ्गिर्यं॥विद्यथ ३७
 कुरुकमर्दंयूरुखागादिकमेलि। जमूर्गविद्ययायङ्गु। गषरु। जन। गषया॥ग्यागविः
 लापिर्गदानमस्तुर्गनविमर्गन। विमर्गनलीविमर्गनी। स्वर्गनयतिवादनं॥यादगर्गन

विमर्गने

मतेपितृदानी

निर्वयलमयवर्जनमर्दनिऽ। मृगार्थगदरुद्धोर्नविषुस्यादोद्धददिकं॥पिरुदानंनिवायस्या
 दुर्गंमकर्मगादुर्गऽ। जन्नाहार्यमायिक। ग। रुमाद्रु। युक्तया। मियां॥ययवगायत्रीद्विष्ट
 न्वसगायगवसवा। सनिस्त्र। वायगायाकु। रिगासियावनाथना॥वद्विष्टिष्टमया। थयाय
 यादायवाविनि। कमादनि। थियायनिथ। थगमायुनि॥स्यादावनि। कगुर्गंनुवतिथि
 न्नागुर्गगा। युजानमयायविनिऽ। मययावदिगा॥समा॥वत्रिवस्यागुगुधूयायविनयाय

[illegible]

द्वै। साधकः कृत्यं कृत्यं वृत्तं मायुश्च मिथ्याये॥ दवरूपादिर्करः न कुर्वन्माकथनादिर्करः सन्माम
वश्यनगान् यमान्वायाधवीबदा॥ नष्टाग्निः करुणाताहा निःश्रयोपथकल्यना। वायुः सं
स्कावतीनः स्यादसाधकः॥ यानिवाकुकिः॥ धर्मक्षेत्रीति मयुक्तिः प्रवकीर्णोक्तप्रवक्ता॥ सुखयसिन्न
मामति सुखयसिन्नदतिव॥ अंगुमानरिनिर्मक्ताद्यदि मोक्षेयथा कर्म। सत्रिवक्ता तत्र नूटश्च
वदावयविषयकम्॥ यत्रिविरुद्धमुगडायात् दिवादाय यमो समो। तथा यावेदाशाद्वाह्यपया

मायालियीउर्न॥वावायामावर्मश्च नहंनिवृत्तंनयस॥जिवर्गवर्मकामार्थेधुवर्ग॥
समान्दके॥सवलेस्तेधुवर्गदंजना॥मिवाववस्यय॥ ॥**नित्यवर्ग**॥ ॥मूर्धोरिधिकाः
नाजन्नावाद्गु॥कनियविट्।नाकिनाट्याथिव॥आरु नृयरूपमहीनिग॥**वाजायुयलता** ॥२
।गवमामन॥स्यादवीश्वर॥यकवकीसावहीमा नृयानामधुलधुव॥यनद्वंवाकसूयन
मधुवस्यधुवधुय॥नासियश्राह्यावाद्गु॥सर्ममागथवाजकं॥वाजकनयनयनि कनिया

लीगलकमाग।मन्त्रीवीसविवामाया न्यकर्मसविवास्तुग॥महामागायवानियुवाधामुयुवाहि
न॥द्वद्विवावदावाधं।याद्विवाकाददनीको॥यनीहानद्वानयाला द्वास्तुवाहिनादनीका॥नकिः
वर्गस्त्वकस्तु॥था।धुकाविकृतीसमी॥स्वयुकाविकृतायाम।गायायामयूरुत्रिषु।रौत्रिक॥कनका
धुकावृयाधुनेकिक॥अन॥यननविकृता॥स्यादकर्वगिकाजन॥सोविदन्ना॥कंयविन॥
स्यादकर्वगिकाजन॥सोविदन्ना॥कंयविन॥सनया॥सोविदाधम।यंराववेववमुत्ता॥सव

कार्थनजीविनः॥ विषयाननननावाकाः॥ मिश्रमतः॥ यत्र॥ उदासीनः॥ यत्र॥ यावित्यादिसु
 दृष्टनः॥ विषयोविमयत्ताविषयद्वयद्वयद्वयः॥ द्विद्वियकादिनामिषद्वयगणवगणवः॥ अ
 हिद्यागियत्रावागिषयर्थिषत्रियर्थिधिनः॥ वयस्यः॥ मिश्रः॥ सवयाः॥ अथमिषसखासूदगः॥ सखा
 साकयदीनस्यादनुवाः॥ अन्वर्तनः॥ यथाहवर्णः॥ यविधिः॥ ययस्यः॥ अथः॥ यात्रः॥ अथः॥
 नृषः॥ अथः॥ यययिगमिषः॥ साम्बसत्राः॥ अतिषिकाः॥ देवदूः॥ गणकावयिः॥ अथः॥ अथः॥ अथः॥

जोनिलस

निकाहोनिजुयि। मांजिकाहानसिद्धान्तः। सगीगृहयनिः। समी॥ लिपिकनादवया। ६॥ नववयं वृध
 तखक। लिखिनादवयंस्कान। लिपिनिवित्रुमिथ्यो॥ स्यात्संद। हवायुना। दूरंगद्वयकर्मणि॥
 जूधनीनाध्वग्नध्वन्यः। यीथः। यधिकः। जूययि। स्वाम्यमायः। सुदृक्काया। वाद्यदगवितानिय॥
 वाय्मज्ञानियकृतयः। योवाली। छलयायिय। संवित्रा। वेयहायान। मायनद्वेधसाधयः॥ य
 हुला॥ ४॥ नकयसिधयः। यहावात्साहमनुआः। दयः। स्कनयवृद्धिध्विवा। गर्भनीतिवदिनी॥ सयना

यः परावधय रुजः काणदण्डं । सामदानरुददधु विष्णुवायुचतुष्टयं ॥ साहसं गुदमादण्डः
सामसांभम (थासमो) रुदायजायाव्यथा धर्मार्थयत्रीकली ॥ यश्च विषयवृत्ती (ला) यस्मिन्नीया
याग्ययत्र ॥ विविक्कविज ननु न निःशलाकासु आत्रु ॥ बह (आयां) गुवालिगे बहस्यं न हवति ॥ ५
षु । समो विधं रुविष्णुसो रुवाचं (ला) य (आ) विनाग ॥ अथ यन्मायकल्या सु दण्डय्यं समं जसं । युक्
मीययिकलस्यं रुजमाताहिनीगवत् ॥ न्यायं यविषयधं ययथाव (ला) गुसमर्थनं । अत्र वादसु निर्दे

(ला) निदण्डः सामनयसः । युक् मीययिकलस्यं रुजमाताहिनीगवत् ॥ न्यायं यविषयधं
ययथाव (ला) गुसमर्थनं । अत्र वादसु निर्दे (ला) निदण्डः सामनयसः । निदिष्टाः सावसं स्रुत
मय्यादावाव (ला) सिनिः ॥ आगायत्रा (आ) मनुष्य समगूदानवधन (द्वि) यार्थं द्विगु (ला) द (ला)
रागा (ध) यः कवावलिः ॥ यदादिदयं गुल्काकुं पा रुमं रुयदानी । डयायनमूयय (स) स
यदावम (था) यदा ॥ योगकादिगुयदयं सदायादव (ला) यगत् । तत्कालसुगदात्वं स्या दायगिः

कलश

द्वे

चो

सिंहसन

काजक ३३। सीरि कीरुलं सय उदक १२ लभ रुम ॥ अदरं वक्रिताया दे दहं सय वन कर्जी।
 मही रुजामादिरुयं सय कय सय रं रुयं ॥ बाके गाल विज्ञान १३ सा ज्ञान वं रुय काली कं। नृया मने
 प्रक रुजा मने सिंहा मने यगन ॥ रुमं वृ गे ला गय रु बाहु रु नृय लक्ष्मण। रुद कं रु १४ यूर्ध्व कं रु १५
 रुं गम ज कम काल क ॥ निव ग १ निवि रं रं रु मरु नं गूय व कर्णी। रुसा श्रव थ पादा रं से ना ३
 सा व रु रुयं ॥ दकी दना वला रुसी दि न रं नं कया छिय १। मरु ३ ग गाना ग १४ यूर्ध्व वा व १३

द्वितीयां

संनयार्ता

रुया १। यय व १। अमयीथा जवन मु रु वा विक १॥ यक्ष १४ वीमि १ कर्क ३। था वा रा न थ स्य
 य १। वाल ग कि १। वा याम्य ग्वा व रु वा वा उ वं ग १॥ निचा श्री नं य द १। न दिन ने क न ग मा र ॥ क
 ग्वा रु म व म ग्वा न १। रु वा क वा य नि स न १॥ नि ग ल रु ग ला द १। वृ द ल श्री य मा श्र व न ॥ गू र्क
 दि रं १। वी वि न कं १। वि वि न व नि रं १॥ ग न थ मू १४ य श्र व मा था वा रु वा थ म छि र १। क वि का उ
 ख ली ना मु १। ग रु वी व रू १४ य मा न् ॥ गू र्क मु नी मा ला झू ल वा ल रु म रु वा ल वि १। नि रू वा व रु

लुण्ठितो यत्रावृत्तमद्वैतवि॥ यानवकिणियूद्धा (ध) लता ३१ स्यंदनावध ११ असोयुधवधयक
 याननसमवाययन्॥ कर्णवध ११ अवहर्षी रुयनवसमं गयं। क्लीवन ११ कटाक्षी स्याद्देगी कं
 वलिवायकं॥ निविकायाश्च यानस्या दानार्थं खादिकासि यं। रुद्रमुद्रयवेयासो द्वीयिचमावृ ११
 मत्र (ध)॥ या लुक्कं वलसंवीत ११ स्यंदन ११ यांशु कं वली॥ व (ध) कां वलवासा ११ कं वलादिहिवावृ
 न॥ निषुद्धे वाययावध ११ वधकशावधयुज ११ वृ ११ मुक्ती वयानमूर्खं स्यादध ११ मयस्कव ११ व

दुर्गवथा ३१ गस्यानं नमि ११ मुक्ती स्यात्सुवि ११ यमान्॥ विंठिकानाहि वकाय कीलकमुद्रयावलि ११
 वधगुक्तिर्वृ (ध) ना कूतवसुयुगं धन ११॥ अन्नकषादावधयसं वासं (ध) ना युगायुग ११॥ सः
 वृ स्याद्वाहनं यानं यग्मं यगं व (ध) वली॥ यवस्य वावाहनं यरुद्धे नीतकमसि यं॥ अ (ध) व
 लाहसि यका रुस्या वाहानिवादिन ११॥ नियन्ताय जिगायना सूरु ११ रुकायसावधि ११॥ सवाह
 दकिणस्त्रो व संज्ञावधकूद्विन ११॥ वथिन ११ स्यन्दनावाहा अश्ववाहासुसादिन ११॥ रुढायाव

रथयानी

रथयानी

धयाद्वात्र॥ सना नकापुसेनिका॥ सनायां समथगाय सेन्यासु सेनिकाधम॥ वल्लिनाथसः
 कमुल। सादयासु सदुषि॥ यविधिमु॥ यवित्रव॥ सनानिबोदिनीयति॥ कं वृकादाववा वि नूवादा
 लामु। यकुम। स कं वृका॥ ववनिगसा न सना॥ धिका। स अथ गी र्थकं॥ गी र्थ र्थं वनित्रमुथ। १८
 गनू र्ग वर्म दज्ञनी। ड वधुद॥ कं कटका। जग व॥ क वया सिर्या॥ अमूक॥ यनिमूकथ यिनदः
 धायिनद वग। सन्नदा वमिग॥ सजा। दं गिगा। धूर कं कट॥ गिगामूकाद यावर्म रुर्गाकाव

विकंग। ला। यदानियरुपनग यदानिक यदाजय॥ यङ्ग थयदिग थथ यदानं पहरि स
 रुनि॥ गस्ती जीवका धुपृष्टा यधीयायुधिका॥ समा॥ कनरुस॥ मयथा ग विनिख॥ कृपू
 खयग। अयवाद्ध यवको सो लकाय थुनमायक॥ धनू वीवनू यानू वानू का निधं ग मधीव
 नूद व॥ स्यात्की। गानिक॥ गकिरुनिक॥ याष्टी कया व थुधिकी यष्टिय व रु
 निकी। नेधि निका सिरुनि॥ स्यात्समो यासिक कोनिकी॥ यमी रुल कया लि॥ स्यात्समा कीवे

[illegible]

धिकावधितानथी॥कर्मगमनकामीनामयन्तीनरुथरुणी॥धूमावीवधविकानाजना
जिष्णुजित्वन॥संयुगीनावनासाध॥नम्रजीवादयानिषू॥धजिनीवादिनीसनायुगना
नीकेनीवमू॥वदूयिनीवलीसेन्यवर्कवानीकमदिया॥बुरुमुवलविन्मासा॥रुदायंठाद
यायुवि॥सुगामावाबुरुयावि॥सेनायुष्ययदियरु॥एकरुकरनथागुध्म॥यदि॥यययदा
तिका॥यय॥गेधुगुलेसत्र॥कमादायायथा॥रुन॥सनामूर्खगुल्मगालो॥वादिनीयुगना

यमूः। अनीकिनीदानीकि नन्दोदिष्यसंयदि॥ संपरिः। धीयलन्धीध्रियय्यां वियदाय
 दो। अयूधनुयद्वर्णीगमुममुमथासिधो॥ वनध्रियोवन्वगवायनकादंठकामूर्कं। ॐ
 सायथकलूय कालयुष्टं गवायनं॥ कथिचकस्य गांठीव गांठीवीयन्तमूसको। काटिबसा ६०
 टनी। एसाध नलमाद्यागवायन॥ लसुकमुवनमूर्ध्वं मोवीधालिजिनीगुल॥ सायय्याली
 रसालीट मियादिस्मनयंयकं॥ लसुलन्दीगवय्यय गवाय्यासडयायनं। यूसलकयालः

स्वर्गादिन

विनिखाञ्जिद्वगखगयुग॥१॥ कर्तव्यमार्गलगा॥ यकीवायः॥ यद्वया॥ यद्वनामुना
वावा॥ यन्कावाञ्जिद्वग॥ निमस॥ यद्विगवा॥ विषाकदिमलियको॥ गू॥ वायासङ्गः
लीवनिर्वग॥ यद्विद्वया॥ गू॥ खर्वङ्गेनुनिर्दिग॥ यद्वहासापिनिद्वया॥ कोद्वयकामगुला
ग॥ कववाल॥ कृयागवत्॥ सवू॥ खर्वङ्गादिमूहोस्या॥ नखलागनिर्वग॥ रुलकाप्रीरुलवम
संग॥ हामूहिवयाय॥ द्य॥ लमूहवधनी॥ स्यादीलीकववालिका॥ निडियाल॥ युगमुला

दुर्

यत्रियः यत्रियातनः॥ द्रयाः कूजः ध्वनिः यत्रियः यत्रियः॥ स्याद्वृक्षीयासियुगी
 यत्रिकायासि(वनका॥ वायुसिगन्ताङ्गीकृता गवलातामनासिया। यासमुकृन्का
 लसु क्रियः याल्यसुकाटयः॥ सर्वोहिसावः सर्वोयः सर्वसंनरुनाथकः। लाहुरिहाः ७१
 वासुरुगां वाहूनीवाजनाविधिः॥ यत्तमयाहिगमनमनोतदहिषगर्न। याहा
 यमाहिनिर्यालीयसुनंगमनं॥ स्यादासावः यमनलीययकयलिगार्थकं। गृहिगाय

यलीगमात्र। यानमहिक्मः॥ वेतालिकायावरुलायिकियाटीकार्थकाः। स्यामागवासु
 मयुकावन्दिनमु। ०या०काः॥ सनीयकासुसमयात्तयमादनिवर्हिनः। वगूद्रयाः क्रियायू
 लिः। यांगुनानदयानजः॥ वृक्षकादः समर्थिज चिजलोरुगमाकृत। यगाकायेजयनीस्या
 कननंयजमक्रिया॥ सावीनासनंयूद्धरुमियातिरुयसदा। गुरुयूवमदंयूवमियरुंयूवि
 काक्रिया॥ गुरुयूविकादयायासात्तवावनामनि। गुरुमदमिकाठुसास्यात्यवस्यनं

यारुवददंकात्र॥दविर्लंगत्र॥सहावन्त॥योनिस्त्रिमधुमय॥कि॥यत्राकुम॥या॥विकः
मन्त्रनिर्गकिता॥वीत्रयालीगुयान्यानं वुरुवाविनिवात्र॥युद्धमायाधनंठान्यं पवनंयविदा
वली॥मृयमास्कंदनंसीखां समीकंसायवायिकी॥अक्षिपांसमवानीकत्र॥१कवहविग्रही॥ ८२
संयदात्रासिर्षयागकलिर्षंशुगसंयुग॥१॥अस्त्रामदसमाद्यानसंयामास्त्रागमादवा॥स
मूदाय॥सुय॥संयत्समिष्याजिसमिधुव॥नियुद्धंवाद्युद्धंस्यान्नुमन्तंनलसंकल॥कृष्ण

गुप्तिरुनाद॥स्यात्कत्रिर्षाद्यटनाद्यटा॥कदनंथावसंवावावृंहिर्गकत्रिगर्जिर्ग॥विष्णुवावन
व॥स्त्रान॥यटकागुम्वोसमी॥यमरुमुवन्ताकावा॥रु॥अथसुवन्तिर्गंशुर्न॥अज्ञर्षीकीर्षमूत्याग
उयसर्ग॥समंगयं॥मूर्च्छागुक्कभर्तमाहा॥यवमर्दमुपीठनी॥अस्त्रवस्कंदनंलस्यासादनंविज
याजय॥वेनगुद्धि॥यमीकावावेननियोगनंयसा॥यदावादावसंदावदावाविदवाद्यव॥अ
यकुमायजानश्च॥नलरुंग॥यवाजय॥यवाजितयवा॥रुमी॥विष्णुनक्षत्रिवादिनी॥यमायलीनि

वरुणं निकावलीं विष्णुं ब्रह्मं ॥ यवामनं यवामनं निरुदनी निहिंसनं ॥ निर्वासनं सङ्गयनं निर्य
 नूनमयासनं ॥ निरुहं निरुननं कथनं यविवर्जनं ॥ निर्वायनं विष्णुमनं मावलीं यविव्याग
 नं ॥ उदासनं यमथनं कथनाज्ञासनातिथ्य ॥ ज्ञातं रुयिं कविं गव्यामनं थवकाश्रुति ॥ स्यात् ६३
 यवाकालवर्मा दिष्टान् ४ यलयाथय ॥ ज्ञानाणां दयामृष्यं मन्त्रं निधनादियं ॥ यवासूया
 कथयत्त यवमयमसीं सिता ॥ मृगयमीनो गिद्यत विता विद्या विनि ४ पुर्या ॥ कर्तव्यं ॥

यवादिनाम

यायकमयमूर्धकलवर्मा ॥ भगवतीं विरुवनं कलय ४ गवसपुत्र्या ॥ ययहाययहोवर्मा कावा
 स्याद्वधनालय ॥ यसिरुन्नास ४ या ॥ श्वेवजीवा ४ सूयावर्मा ॥ ज्ञायजीविगकालानाजीवागुजी
 विनीषर्मा ॥ **निरुहयवर्मा ४ ॥** ॥ उव्याडवर्मा ज्ञायवेग्यहमिस्यु ॥ विष्णु ४ ॥ ज्ञायजीवाजी
 विकावारुवृक्षिर्वर्मा नजीवन ॥ पुर्या कृषि ४ या ४ या ॥ वालिञ्चवतिवृक्षय ४ ॥ सवाध्ववृक्षि
 वनृमं कृषिवृक्षिर्निलवृमं ॥ दय्याविनाया विरुया र्यथामंखां मृगामृग ॥ सय्यानृगं वलिगु

श

मम ज्ञानोद

व० स्यादृणीपर्यदं न० ॥ उद्धोवाश्चयथागमु कसीदं वृद्धिजीविका। या कुपायं या यिनकं
निमयादायमिथकं ॥ उरुमशूधमसो दोषाया कुपादकोकमान। कसीदिकावार्द्धविका
वृद्धाजीवयवार्धवि० ॥ कृणुजीव० कषय कृषक कृषीवल० ॥ केगुर्वेदयं नालयं वीदि ८४
नान्यद्रुवायिनं ॥ यथायवकृषयसिद्धं यवादिहवनीदिनन। निलयं केलीनवमांषा मागुरुं ग
द्विबूयता ॥ मीझीनकोदवीधायं। नवयान्याद्रुवकमी। वीकोकृणं कृषकं सीर्यं वृद्धं वरुल्यव

जुग

वा

माय २

कृः कुचिवादि
कमे

न० ॥ किमुदा कृमं रुमीया कृमं निरुत्यं गिमीयममिहसिन्। द्विगुदा कृमं सुसर्वं पूर्वसं वा कृममयीह ॥
डादादकादिवायादो डोनिकाद किकादय०। खात्रीयाय सुखात्रीक उरुमशूधययिषु ॥ यूनयं स
कयाव्यय कदाव० कृणुमस्यु। केदात्रकं स्यात्केदार्यं केगुं केदात्रिकं ग० ॥ लाष्टान्तिनव० यं सि
कादि० नालद्रुदन। याजनं गादनं गार्गं खनिगमवदावर्धं ॥ दार्गं लविमावर्धं ॥ यागं याकम
थारुलं ॥ नित्रीयं कृटकं रुल० कृषिमा लाङ्गलं रुलं ॥ गदात्रनैवसीत्रयं नम्यास्त्रीयुगकील

रुलया नृजनेषु

ब्रीहि या
ध धो

क॥ नीया ला झल द लु॥ स्या त्सी गाला झल य द नि॥ यूसि म वि॥ खल दान॥ न्यसं य य लु य धन ।
आधु वी दिय ट ल॥ स्या त्सी ग लू क य यो स मो॥ गा य सु ग रु त्रि ग क ला य सु स नी ल क॥ रु न लु खं
ठिका यामि का न दू स सु को ड व॥ म ड ल्य का म सु यो थ मू क रु क म य रु को । व न म ड स र्व यं रुं दो ८३
ग नु रु क द व को॥ स र्व य ग ट क धां सो ग ढी सां ग ट ना वृ टि॥ सि द्धा र्थ ह व व व लो॥ ग व म ४ स म
न ४ स मो॥ स्या य व क सु क ला व ध व का रु त्रि म थ ज॥ द्वा गि ल गि ल थ ज ध गि लो यि ज ध नि षू ल
नो दू सि धू त म

वज्रिया

क व ४ क व रि ज न ना ^{प का} वा जि का कृ षि का सु वी॥ वि यो कं गु सि यं गू द अ त सी या द मा कू मा । मा रु ता
नी गु रं ग यो वी दि रु द स ४ यू मा न॥ किं म व ४ स य गू कं स्या न् क लि णं ग स्य मं ज नी॥ वा न्द वी दि ४ स
व क त्रि ४ स व गू त स कू ला दि न॥ ना जी ना उं व कां ठा स य लाला मु य नि ४ रु ल ४ । क उं ग ना व र्व क्रीः
व वा न्द स वि यू मां मु य ४॥ गू का मु शू नू नी का । य ग मी रिं वा नि षू रु न । म ड मा व सि र्ग वा न्द यू ग
लु व दू ली क र्ग॥ मा वा द य ४ ग मी वा न्द गू क वा न्द य वा द य ४ । ग ल य ४ क ल मा धा य व दिका या य

ध यो

वंशमी॥ गृहस्थान्यानिनीवात्रा॥ श्रीगवर्गवयका॥ अया॥ यामसलासीयादूखलतमलूखली।
 वृष्टनसूर्यमयीयालनीनिगृ॥ यमान्॥ स्पृगवसवोकींजालयिठोकटकिर्लिंजको। समोनो
 नसवयांशुयानस्कनमरानस॥ योनागवसूयनाक॥ सूर्यकासुवन्नवा॥ आनालिकाश्रव ८३
 सिका॥ सुदाडोदनिकागुला॥ आयूयिक॥ कांदविका॥ कककान॥ मरिषू। अमकमद्वानमधि
 धयलीवृत्तिनिका॥ अश्रवयानिका॥ नगकद्ययिरुसन्नायि। रुसवायथनसीयादंगः

हेग

बालागमलूकं॥ श्रीवन्त्रवीर्यडाहानाकंदूर्वाखदनीमियां। अर्लिंजन॥ स्यान्मधिकं कर्कयाल
 गलनिका॥ पि० न॥ सुलूखाकूठं कलसुगिषूदथा॥ यठकूटनियावमु। गवावावदमानः
 क॥ मजिषंयिषयवनं कंसाशुयानरुजनं। कू॥ कू॥ धरुयागं सेवान्नाकूडय॥ यमान्॥
 मर्वमावयनंरुलुं यागामगंरुजनं॥ दर्वि॥ कंवि॥ खजाकावस्यारुदूदोबुरुक॥ अश्री॥
 कंरुविगकं गियनसुनुनालिका॥ कं॥ वधकलं वधवसवानडयस्कन॥ निकिठीकं ववूकं व

। निदि। ल

मरिचादी

नितिसि

हजि २

मले १

जी १

कृष्णजी ५

कृष्णजि

वृक्षान्नमथवलकं॥^{मले}मत्रिवकालकंकुब्रूमृषवीधर्मपरुनी॥^{जी}जीवकाजव(६)जाजीक॥^{कृष्ण}कृष्णगुजी
 वक॥^{पात्र}सूषवीकात्रवायुधीपृथ४कालायकं^{पात्र}चिका॥^{पात्र}गुडकं^{पात्र}गुडवर्षा^{पात्र}दधं^{पात्र}कृगाविगुनकं॥^{पात्र}कृष्ण
 वृक्षयक्षचाकं^{मले}मथगुं०^{मले}महोषकं॥^{मले}मुनयसकथाविश्वनागवविश्वरूपजं॥^{मले}आत्रमालकसो
 वीत्रकृष्णाधारिषुहानिय॥^{मले}अत्रनिशामध्यामृकं^{मले}गलानिचकांजिकं॥^{मले}महयवविजगुकं
 वाङ्गीकं^{मले}हिगुवाम०॥^{मले}मत्स्यगीकात्रवीपृथीवायिकाकवयसिंधुजं॥^{मले}निगकाकांयत्रीपीगा

सुठ ३

हि ५

पात्र २

७१

कोजि स्वलाय
५४

नवनादि

हजि १

मनु ५ वी १

सिद्धि १

रुविडावववर्जिनी॥^{मले}सामूदंयगुलतवहमकीयवजिर्नयतन॥^{मले}सैधवाफुगीननिर्वमालिम
 थंयसिंधुज॥^{मले}नोमकवसूकंयायुं^{मले}पिण्डंयकृगकद्वयं॥^{मले}सोवञ्चलाश्चनूयक^{मले}निलकंनगमय
 क॥^{मले}मत्स्यंशीरुालिगंयगु^{मले}विका^{मले}नो^{मले}गर्क^{मले}वासिगा॥^{मले}कूर्चिकाकीत्रविकृति४^{मले}साद^{मले}माता^{मले}गुमाजि
 गा॥^{मले}सारुमननुनिष्ठानं^{मले}शिलिं^{मले}ग^{मले}वासिगाव(५४)^{मले}गूलाकृगं^{मले}रुडिगुं^{मले}य^{मले}गूला^{मले}मूखा^{मले}गुये०^{मले}मं॥
 डोदधिगमोदधिगुं^{मले}कमूद^{मले}धना^{मले}यसं^{मले}कृगं॥^{मले}यलीन^{मले}मूय^{मले}मयने^{मले}सय^{मले}सुसा^{मले}सूसं^{मले}कृगं॥^{मले}स्यात्यि

१२ ५२

चिन्तं विजितं संमृष्टं। विमं सम। विक्रं मसृष्टं सिद्धं सुखं सुखं वासिनं। आयकं
 धालि नयूषा लोकाः ४ यं रुनि वाक्यं। यथकः ४ यात्रियि टका धाना रुष्टय वसियः ॥ यूषाः
 यूपः ४ यिष्टकस्या कर्तृ रू द वि सक वः ॥ रिषास्त्री रुकर्म (धन म द नास्त्री सदी दि वि ॥ रिमि ८८
 द्वादशिका सर्व वसा। यमं रुम सिया। मास नायाम निः ४ वावा मं रुक सम रु व ॥ यवा गू व
 श्रिका धा ८८ विलपी न वला यसा। गवां विषु ग वा सर्व। गा विज्ञा मय म सिया ॥ नदि शु र्कः

वीवास्त्री दुर्गं की वं यय ४ समं। यय सामा अ द धा दि द्वा द वि य न न र्क ॥ धृग मा अ रु वि ४
 सयि न व नी र्क न वा दृ र्क। गरु दे यं ग वी न य द्वा। ग द्वा द्वा इ वं धृ र्क ॥ दं ग द र्क काल (गय
 म विष्ट म यि। ग व स ४ ॥ ग कं धृ द श्वि न्म धि र्क या दान् व द्वा म्ब नि र्क ली। मं रु द वि रु र्क म सु य यूषा
 ३ रु न र्क यय ४ ॥ अ ग ना या वृ रु द्वा द्वा ग् या स मु क व लार्थ क ४। सयी नि ४ स्त्री गु ल्या यानं स ग्नि ४
 स्त्री स रु रु र्क ॥ उ द द्वा य वि द्वा सा रु र्क ग र्वा अ श्वि मु रु र्क ॥ अ म नं ल य अ रु र्क ना नि य सा

सह भोजन

न्यादन्त्यपि। सोदियं नयं र्दं रुदिः ॥ कला रुक सम मज्जिगं ॥ कामं य कामं य र्पा र्कं निकामं
 ग (थ) यिगं। गाय (ग) या ल (ग) स र्खा। गाय गारु व व न्न वा ॥ गाय म दि वा दि कं या द वं ध नं दो
 ग वी श्व न ॥ गाय मान (ग) मी (ग) कू लं तु (ग) ध नं स्या द्ग वां व अ। निष्ठा गिगं ग वी नं ग जा वा यः ८०
 गा गिता ॥ यु वा ॥ ड का रु डा व ली रु द्ध म ष रु य व रु वा वृ ष ॥ अ न शान सो न रु था। गो वृ क्ती
 सं दं ति नो क्क कं ॥ ग वा। गाय ग वी व त्स। ध न्ना वान्म क। धे नू कं। वृ था म ही न रु क ॥ स्या द्ध

ते

आ क मु ज न द्ध व ॥ ड ल्य न ड का जा ना क ॥ स या जा न मु ग र्भू क ॥ ग क रु क नि र्व त्स क ॥ स्या
 द म्य व त्स ग नो स मो। आ र्ध रु ॥ र्धं ल गा था ग्ध ॥ र्धं ता। गाय नि नि द्ध व ॥ र्धं व य द न मु
 व रु ॥ पा स्ता गु ग ल कं व ल ॥ स्या न सि ग मु न स्या त ॥ य ष वा ट य ग या र्ध ग ॥ यु ग म दी
 नां रु वा रा ना। यु ग्ग या र्ध ग्ग क टा ॥ र्ध न नि ग न ग द्वा रा। र्धं दं र्हा लिक से त्रिकी ॥ यू
 र्धं र्ध य र्धो व य र्ध वी ष ॥ स र्ध वं ध ना ॥ ड रु वा व क र्ध वी लिक र्ध ना व क र्ध ना व रु ॥ स रु

वृन्नी॥१॥ स्यात्तावे सवे वृन्नावह॥ माहयी सो वरुयी॥ गो वृन्नामाता वृन्निनी॥ अरुन्नाय्या वा
 दिनी स्यात्तुमा॥ ग॥ वृन्ने विकी॥ वृन्ने दिरुदात्म॥ १॥ स्य॥ १॥ वली वृन्नादय॥ १॥ दिरायनी दिव
 वा॥ गो॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ २०
 कान्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ कान्नाय्या सय्याय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ स्याद्वृन्नी
 वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥

दिगुपुना
 जा मा मा
 स न वि यधि

आयीना वृन्नाय्या वृन्नाय्या॥ डावकी वृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ सय्या सय्या सय्या सय्या सय्या सय्या
 वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥
 वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥
 वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥
 वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥ वृन्ने वृन्नावृन्नाय्या॥

करीया

केतव्या १

वाणिज
विक्रिय

वरुकाजकौ। यकावनकुवालयामासरागदरु॥४॥खवा॥वेदरुकरुवाहातेगमावालिजा
वहिक। यवाजीवाआयाविक॥४॥यविकयिकथस॥विकनास्यादिकयिक॥कायक॥ययिः
क॥समो॥वालिथुवलिआस्यान्मूर्यवक्षायवकम॥नीवीयत्रियलीमूलवतंलाहोविकरु २१
ली।यमिदानंयमीवक्षीवेमयनियमावयि॥यमानूयनिधिर्न्यास॥यनिदानंनदयली।क
थयसात्रितंकर्यंकर्यंकर्यमागक॥विकर्यंयलिगर्थययर्थकयादयमिषू।क्रीवसस्या

पान २

प्रा ३७

विदू म १

प्रीसिखवालेयूनयंसकं॥बलीमलिद्वयावभआमोमूकादिकयियासुवर्णसुवर्णकनकंदिनवर्ण
रुमहाटकं॥नयनीयगातकूरुंभांगयंरुमकवर्ण।वामीकर्मगातवूर्यमहावजगकावनी॥
वूर्यंकारुखनीगामू नदमसायदाधिया॥^{नयनिसा}पुलकावसुवर्णयकृष्णीकनकमिखद॥द्वर्णवजग
वूर्यंखरुनीधनमिखयि।नीति॥धियामावकूठानधियाम॥[॥]पुर्णसुवर्णवजगवनिः
शार्दयवागिय।लाहाकीगकुकातीकूँपिठंकाहायसायसी॥अधमावाथमंभूरंसिंहाधमयिन

कावयती २

नरया

नजाग १

अं वं

जा ६९

मल। सर्वकर्मो जसं लोहं विकारवस्य स ४ वृणी ॥ काव ४ कावो थययला वस ४ सूग ध्यावद। ग
 वलं माहिर्यं गृह्ण मरु कं गि त्रिजामल ॥ प्रागां जनं उ सो वी रं काया गां जनया मन। ^{जिला मुं} गुहं जनं निः
 खिपी वं विठु न्न कमयू वकं ॥ कय वी द विकारका ॥ ॥ ॥ इयं गुहं वसां जनं। वस ग रं गा कं ^{मोजन} हिलं गं ७३
 वामनिगु गंधक ॥ सो गं विकमु य द्रव्या कला लो गुहं ललिका। वी नित्यं यथ क ४ यो यकं कू
 सुमा जनं ॥ ^{कुं म} वि ३ रं वी त नं गाल मालं यरु त्रि गाल कं। ^{हिला} मे वय मर्थ गि त्रिज म म अं व गिला अशु।

मि ५८

कुं म

कं

वाल गंध वसया विठु। गाम गसा ४ समा ४। ^{मि ५८} दि ३ ना चिकरु ४ रु न ४ सिं दू रं ना ग स रं वं ॥ ना ग सी
 सकया। गह वका विगु य विचटो वं ग वं। ग मू थ यि व मू ला थ कमला रु वं ॥ स्या नू क स रं व क्रि गि रं
 म हा व जन मि य यि। म व कं व ल ड भू य ४ ना ग र्ण ना ग लाम नि ॥ म व को रं मा दिका दि म व क्रि रं उ
 सि क कं। मन ४ गिला गुह न टी म ना ल ना ग जि दिका ॥ ने या ली क न टी। गाला य व का वा य वा य
 अ ४। या क्ता थ स र्जिका का व ४ का या ग ४ सू र व व क ४ ॥ सो व र्च लं स्या दू य कं ल क की वा व ड वा यः

^{लेतमरी व॥} ^{वीजलानुव}
 ना॥ निगुर्मा॥ मत्रिचं मावटं मूलमेकव॥ ग्रंथिकं विद्यली मूलं चटिका गिरः स्ययि॥ गलामी
^{रक्तचन्दन}
 रक्तकण्ठनायगाङ्गं रक्तचन्दनं॥ निकटं शूषर्षाधार्षं गिरुता गुरुत गिरकं॥ ॥ निवेद्यवर्गः॥
 ॥ गूडा श्रावत्रवर्णं श्रवृषला श्रजयन्यागा॥ श्रवर्णाला सुर्माकीर्णं श्रवृषक वक्षदयः॥ गूडा २५
 विष्णुमुकत्र (६॥ मृष्टा वेष्मा द्विजना ना॥ गूडा कृगियया वृष्ण मागवः कृगिया विष्णु॥ माः
 दिव्याया कृगियया॥ कृष्णया गूडया॥ सुग॥ वास्र्मा कृगिया लूग कृष्णं वेददिका विष्णु॥

^{कुतुना २} ^{गठया २} ^{मुद्रिका ३} ^{कुलालया}
 वथकात्रमुमादिष्टा कृत्रिर्मा यस्यासंरुवः॥ स्याच्चलुत्तमुजनिता वास्र्मा विषलतनयः॥ कावृः
 गिल्लीसंरुगे सुद्वया॥ एलि॥ सजातिदि॥ कृलिक॥ स्यात्तुल (६॥ मालाकात्रमुमालिक॥ कृर्
^{गठ} ^{वावना २}
 कावृः कृलाल॥ स्यात्तुल गलुत्तयक॥ तनुवाय॥ कृर्विद॥ स्यात्तुन्नवाय सुसोचिका॥ वृग
^{मा २५} ^{ना कवि ना} ^{कुना २}
 जीवश्रिगकत्र॥ शकुमाजी सिधावक॥ यादूकृत्रमकात्र॥ स्याद्वाकात्राला रुकात्रक॥ नार्जियः
^{मा २५} ^{ना कवि ना}
 म॥ स्र्माकात्र॥ कलादा वृषकात्रक॥ स्याद्वा श्रिक॥ कावविक॥ एलिक्क स्यात्तुलक॥ तकाउ

वर्द्धकिस्रुषात्रथकात्रथकाष्टगट्। यामावीनायाममनक॥ कोठगकात्रवीनक॥ कनिर्मगिदि
 वाकीकिनायिगाकावसायिन॥ निष्कजक॥ स्यादजक॥ (गोठिकासमुद्रात्रक॥ गावात्त॥ स्या
 दजाजीवाद्वाजीवसुदवल॥ स्यान्मायाशाम्बरीमायाकात्रसुयागिरुत्रिक॥ (निलानिनसु २३)
 (निलूयाजायाजीवा॥ कृष्णान्नित॥ रुवगांययिनटाश्वानसुकृणीलवा॥ मारुगिकाभीन
 जिका॥ यालियादासुयागिद्या॥ वेगुया॥ सूर्वेवविकावीषावादासुयेविका॥ जीवानक॥ ग

कनिकाद्वोवागुलिकजालिको। वेगीसिक॥ कोठिकथमसिकथमसंगयं॥ रुकाकारुनिरुक्रमक
 नोवेतनिकायिस॥ वारुयकावेवविकारुववारुसुक्रुत्रिक॥ विवर्ण॥ यामत्रानीव॥ साकृगथ
 पृथगुन॥ निहीनायमदागाल्म॥ रुन्नक॥ (धनत्रयस॥ रुषदासत्रदासयदास॥ यकयटका॥
 नियाश्चकिंकत्रयेयुजिषयत्रियात्रिका॥ यवात्रितवत्रिकन्दयत्रजातयत्रेविका॥ मंदसुन्द
 यत्रिमृजजालस्य॥ गीतकालशानसू॥ दकगुवगुवयगलपटव॥ सूक्तनडसू॥ यभुलप्लव

मुद्रा जगदिनेगी

मागझ दिवाकीरुजनीगमा॥^{बी. बी. बी.}नियदधययावनयासियांगलयकसा॥^{कल. नी. ल.}रुदा॥किवागभव
नयुलिन्दाम्नुजगय॥^{बी. बी. बी.}या॥^{बी. बी. बी.}मृगवयजीवामृगयुनवकापिस॥कोलयक॥सालमय
॥कूकूवामृगदंगक॥^{बी. बी. बी.}धुनकारुषक॥^{बी. बी. बी.}यादलकमुसयागिरा॥^{बी. बी. बी.}अविश्वकदमृगया २३
कूगल॥सबमागुनी॥विद्वन॥सूकभायाम्नावकनसन्दा॥यधु॥आधुदनीमृगयास्यादा
खदामृगयासिया॥दक्षिणवल्गुयाम्नादक्षिणामाकूववङ्गक॥^{बी. बी. बी.}त्रिवेकागविकसनः
मुद्रा

दस्युगसकवमागुमा॥यनिनाधियवाकदिपाटयवमलिल्लका॥त्रिवेकासेयथोर्थयस्य
लाधुगदनी॥^{बी. बी. बी.}गीमंससूयकवर्णवधनमृगयदिकी॥^{बी. बी. बी.}डमाथ॥कूटयनुंस्यादागुवामृगव
धनी॥^{बी. बी. बी.}गुल्वंयवाटक॥^{बी. बी. बी.}मुगुनरुमिषवटीगुध॥^{बी. बी. बी.}डद्याटनीघटीयनुं सलिलादाहनुं पद॥
यसिधमावायदधु॥^{बी. बी. बी.}सूगालिनत्रिगनव॥^{बी. बी. बी.}वालिधूनि॥^{बी. बी. बी.}सियोगुल्ययसुलयादिकर्मलि॥^{बी. बी. बी.}य
थालिकायुनिकास्यादकुदनादिरि॥^{बी. बी. बी.}कूमा॥^{बी. बी. बी.}पिठक॥^{बी. बी. बी.}पटक॥^{बी. बी. बी.}यगामंरुषाथविहंगिका॥^{बी. बी. बी.}रान

यद्विस्तृतमिदं निर्वृत्तं काथाध्यायका। यादून् वृत्तान् लुप्ते वा नृपदीनपदायदा॥ नदीवद्धीव
दग्धादसाणनीकम्॥ यजुर्लिकागुर्कणाल्पवीम् वधुलवन्नकी॥ नावावीस्यादवलिता॥
मुनिषकः कषः॥ वधनः यग्यवधुः विष्ठीकागुलिकासम॥ नैजसावर्कनीमूषा रुद्रायर्म २॥
यसद्विका॥ लाशूटनीवधनिका कृपाणीकर्कवीसम॥ वृक्षादनावृक्षरुदी टंकः पाषाणः
दात्रकः॥ ककवास्तु कवधर्गस्यादावायर्मवृद्धिका॥ धूर्मीसूक्ष्मलाहयनिमा गित्यं गुकलः

दिकं कर्म॥ यतिमानं यतिविम्बं यतिमायति याननायति द्वाया॥ यतिकृतिवर्चायं सि यतिवि
वृयमावृमानं स्यात्॥ वाचलिङ्गः॥ सममुत्पन्नः॥ सदृक्॥ सदृगः॥ सदृक्॥ साक्षरः॥ समानश्च
सुब्रह्मवयदत्वमी॥ निरुसंकाशनीकागुपनीका॥ यमादयः॥ कर्म॥ गुविष्ठा रुद्रा रुद्र
यारुर्मवगर्गः॥ रुद्रार्थरुद्रलीमूर्त्यं निर्वृत्तः॥ यलं वृक्षसि॥ सुब्राह्मणिलिपियाहान्ता यत्रिपुत्र
वृक्षः॥ जा॥ गी॥ क्षारुमायसन्नवाकादेवयः॥ यत्रिपुत्रा॥ सदिवाकधमयथा यवदं गस्तु

धनेगु

तधुमान

रुक्मली। सुभुधानं मयस्कानं मयुधाना। वृकमा॥ मधमवामाधवका मयमाधीकम
द्वया॥ मेवयमासव॥ सीधु मयका अगल॥ समी॥ संधानं स्यादरिषव॥ किर्णयं सिद्ध
नग्नदू॥ कावाकव॥ सूनामं उग्रयनं धानं गच्छिका॥ वषकासीधानागं मयकाया २८
मूगयर्तनं। वरुणकदवी किगवा। इरुवृकायुगदूतसमा॥ स्थूलनका॥ यमिद्धव॥ सरिका
युगकावका॥ युगासिध्यामकवगी केगवयवधव्यवि॥ य॥ कवृग्नका कासुदवना

॥ यलकाधन। यविनायसुग। श्रीगां समनानयनसिधो॥ अरुयदं सानिरुलं वाणिधूर्मसमाः
कय॥ उकाहृत्रिययागलादकसिधययोगिका॥ गादम्यादन्यतावृकावृथालिङ्गनयिगा।
॥ निगुदवर्ग॥ ॥ नृयमवसिद्धकृतीनामलिङ्गा नृसनरुमिका। धुर्यसाङ्गवयसमर्थित॥
विनायानिधे॥ संकीर्णनाथेवययेवयि। लिङ्गादिसुद्धदेवर्ग॥ सामान्यवर्गसंघया॥ मु
दानायेयदि। गवां स्याद। गे॥ यमुगं यद॥ गुणव्याधियसगदासुथासुसुखरुदका॥ यमुगी

व० मयिहसनिह० ॥ सतकृपालकृतीकन्यायाददाहिसूकृद० ॥ लक्ष्मीवान्नक्ष० ॥ श्रील० श्रीमा
मानमिन्ममुवत्तल० ॥ सादयाल० कान्निक० कृपाल० सुवग० समा० ॥ स्वगन्तायावृत्त० स्वेः
वीस्रकृन्दानिवत्तय० ॥ यवतनु० यवाधीन० यवतानाधवानयि० ॥ श्रीनिधिआयक्षा १००
स्रकृन्दागृष्टकापामो० ॥ खलपू० सादकृकवादीयसूयमिन्नकिय० ॥ जाल्मासमी० श्रकावीसा० र्क
॥ ० मन्द० कियामय० ॥ कर्मदमास्तकमी० ॥ कियवान्कर्मसूयग० ॥ सकर्म० कर्मगीलाय० ॥

कर्मगूढमुकर्म० ॥ स्वव्यमुकुकर्मकन० ॥ कर्मकावमुक्तिय० ॥ अयप्रातामृगस्तग० ॥ अ
मिवागीयु० ॥ गीष्टल० ॥ वृद्धिग० ॥ साकृभिगा० ॥ जियन्मृगतायित० ॥ यवान्न० ॥ यवयि० ॥ अदासूक
कायसमाद्यन० ॥ अयून० ॥ सादोदविका० ॥ विजिगीवा० ॥ विवडिग० ॥ डरोलात्ममुनि० ॥ कृन्दि० ॥ कनि
० ॥ सादवयूवक० ॥ सर्वानीनमुसर्वानरु० ॥ गीष्टमुगद्वन० ॥ लक्ष्मीहिलासूकसूय० ॥ लोलात्तय
लात्तरो० ॥ डनदसूमादि० ॥ सादविनीग० ॥ समूदग० ॥ मरु० ॥ गीष्टाकठदीवा० ॥ कामूककमिगा

नूक॥कमु॥कामयिगाहीक॥कमन॥कामनाहिक॥वि॥वयाविनययसीवयनसिगग्राध
व॥वध॥यगयानिरुगविगनीमयसिगा॥समा॥धृष्टधृष्टगियागश्चपुगलु॥यमिरा
विग॥स्यादधृष्टगुनालीनांकयनयालमुयागुक।नकागीन॥यिगयिषुवृन्दावृनरिवाद १०१
क॥गवावृयागुकादिपुस्यादधृष्टमुवद्वन॥उत्यमिषुसूत्यमिगा॥नंकविषुधमउन॥रु
धुरुविषुरुविगावलिषुवृन॥समी॥निनाकविषु॥किन्नु॥स्यात्सिधिसुमद्वन॥ह्नागा

संगय॥यादियकगावियनरुमुवृयिग॥मनारुग॥यमिरुग॥यमिवद्वानमधम॥अविन्दिक
यमिन्दिकयमिन्दिकीवद्वकीतिगसंयमी।आयन्नग्राधत्याक॥स्यात्कीदिगीकासुयद्वग॥आ
काविग॥काविगाहिगसुसंकसंमुकासिन्।वसनाकायनकीदीविद्वसुयावृलोसमी॥विद्व
वविद्वन॥स्याद्विविद्वविद्वद्वधी॥कध॥कगाद्वसन्नद्वलागगायीव॥अयन॥द्वयावृदि
गगावृ॥गीध्वयन्मीसमी॥विद्याविद्यगयाव॥मसत्यामसलनय॥निग्विदान॥क

ब्रह्मसूत्राय नमः ॥ ब्रह्मसूत्राय नमः ॥ ब्रह्मसूत्राय नमः ॥ ब्रह्मसूत्राय नमः ॥ ब्रह्मसूत्राय नमः ॥ १०१ ॥ कर्माणि कर्माणि कर्माणि कर्माणि कर्माणि ॥ १०२ ॥

उवित्राविद्विर्कामीउविकसम्ब॥विमुक्तवाविमुक्तव॥यसानीयविमात्रिणि।सद्विष्णु॥सद्वन॥
दन्तानिनिद्र॥दन्तिनन्दमी॥कायनमिष॥कायीयधुस्रयनकायन॥जागन्तुकाजागन्तिना
धूर्तिन॥यत्रन्तायिन॥स्रष्टृकृणयात्तर्तिदन्तर्तिदावनायिनीसमी॥यत्राद्वय॥यत्रादीन॥
सायवाद्यवाभामुख॥दवानंयनिदयप्रद्विध्वष्टद्विध्वष्टशक्ति।य॥संदायनिस्रष्टृस
निर्यद्वसिन्नाशक्ति॥यदावदावदावकावागी॥जावाशक्ति॥समी॥वायायुकिपद्वीगमी।वा

वदूकश्च वकत्रि॥ स्याज्जल्यकमुवावाला वावाटा वदूगर्घ्याक। दूर्मखमुखवावद मुखोपाकुः
 प्रियंवद॥ लाहल ४ स्यादधूटवाकृगश्चवादीनुकद्वय ४। समोक्त्वाकृचनी स्यादसीम्यस्वना
 स्वन ४॥ नवव ४। नद्यनानादी वादीनादीकन ४ समो। उज्ज ४। उमूकमु वकुं। अगुमणिदिना॥ १०३
 गूष्णीं गील्लसुहृन्नीका नग्नावासादिगस्वन ४। नि ४। कासिमावकृष्ट ४ स्यादयधसमु विवृण ४॥ अ
 रुगधोहिरुग ४ स्यादायिग ४ स्याविन ४ समो। यस्यादिक्षानि वसु ४ स्यात्स्यादिक्षानि वसु ४ स्यात् ॥

[illegible]

[illegible]

दीयूं सिलवत्तगकलागवः॥ यद्वर्गययूर्वायमदसुवद्वर्तवद्वायुवर्दययूरुयिष्टं प्रिर्वरुयश्च
 प्रित॥ यत्र॥ गतायाकथं यं यत्रार्थखागतादिकान्। गतनीयं गुणं गत्यं संखागलितमथ समं सर्वं
 विश्वमगार्यं कृत्स्नं समं कृत्स्नं निखिलानि निः॥ गार्यं॥ समं यं सकलं पूर्णं मखलं स्याद नूतक॥ वं नि
 वक्तुं सान्द्रं सलवं विवर्तनम्॥ समीपनिकटासनं सन्निकृष्टं सतीतवत्। सदग्राह्याससवि
 त्समयादसवगतम्॥ डयकं भक्तिकाश्रुत्वा श्रुत्वा गृह्यरिना वायं। संसकलवयावदिह मय

दानवमिश्रिणि॥नदिहमनिकतमंयाद्वर्नविषकृष्टकं।दवीयश्रदविष्टंयसूद्वदीर्घमायमं॥
यकुर्तनिमलंवृष्टंयैवर्नगन्तमानं।उच्चयांशून्नाद।याचुगासु।अथवामन॥न्यद्रीयखर्वद
स्वा॥स्यत्रवा।एवममानं।पूनालंविजिनीजिह्ममूर्तिमगकृविर्गनं॥श्रुविष्टंकटिलंहुगं॥ १०३
लिर्गवकमिश्रिणि।मगावजिह्मयगु।ली।वाकल्ययगु।वृलो॥ग।श्रुगमुकृधानि।सदागनस
दागना॥।मृसू॥विजगन॥श्रुया।नैकनूयगया।उय॥।कालशायीसकृष्टक॥सुवनाजिह्ममग

न॥।यविष्कृष्टमयनंगममिष्टंयनायनं॥यलनंकम्यनंकम्यंयलंलालंयलायनं।गननंयय
लंयेवयाविष्टययविष्टव॥श्रुमिष्टिक॥समविका।दृष्टंविष्टुसंरुग॥।ककृष्टकं॥नैकनू
कं॥०नैमूर्तिममूर्तंयवृष्टंयौ॥उमंयिर्ग॥यूना।।एयगनयनयूनागनयिर्गनना॥।यय।।याहि
नवानवा।नवीनानूगनानव॥॥नूगश्रुमात्रमुकामलंमृदुलंमृदु।श्रुगनयकमनू।गन
ययंकीवमययं॥ययं॥यादेदियकमययकमगीदियं॥।एकगानानयवृष्टिर्गका।यिकाय

नावयि। अथ कस्यैवका। अथ कायनमका। विन॥ यथादि॥ पूर्वयो नमः। यथनाया अथाभिर्या।
अनजयनयनममन्याया अथाभिर्या। माद्यं निवर्धकं सद्यं सूर्यं पयकमूलवर्ण। माथात्रदीसा
मान्यमकाकीलकपयक॥ हिनाथकायननन एकमनायननावयि। उवाचयं नेकरुदमस्रु १०६
मविलसिनी॥ अथ लुदमुममस्रु गवाथं उनिवर्धनं। यमव्यं यमिकूलं स्यादयस्रुमयस्रु ॥
वामनवर्ण। वसयं स्यादयस्रु उदकिरी। अकटं नाउसंवाध॥ कलिनी गहनं सम॥ सकीर्णं सैव

मूर्ध्नि रुद्रमीडं डमूणिक। यथा लुयुविर्गसाठः कानमस्रु कानमस्रु ॥ दानसुदमितं गान॥ गमिनं
यार्थिनं दित॥ रुद्रसुद्रुयिगवृत्तः शुद्धिगयुजिर्गविग॥ पूर्वमुद्रुयिगवृत्तः ॥ क्लिप्तः वसि
गसित॥ युद्धलुद्रुयिगवृत्तः ॥ गमिनं सार्थिनं वधितं विदितं विदितं विदितं विदितं विदितं विदितं विदितं
गानि॥ यद्रुविगगात्राको विलीनविदुतवृत्तः॥ सिद्धनिर्वृत्तनिष्पत्ती दानितरुद्रुदितो। उगं स्रु
गमूर्ध्नि यतिगितयंगलुयकन॥ स्यादहिं नमसितं नमसितं मययायितायचितं। वत्रिवसितं

यत्रि वसितम्यासिगं याययत्रिगं य॥ सन्नायितमुसंगका धूयितधूयायितध्वनश्च। द्रष्टामरु
सृष्टः॥ यद्वन्न॥ यमदिन॥ यीग॥ विन्नं चूर्णं लूनं वृष्टं दार्णं चूर्णं वृष्टं मर्कं चूर्णं रुष्टं चूर्णं यनिगं
गालिगं। लब्धं यार्कं विन्नं हाविगमासादिगं यरुगं य॥ अन्त्रविगंगवविगमन्निष्टं मार्गिगं मुगि १००
गं। अर्धं सार्धं विन्नं निमिबं सिमिगं समन्त्रमूर्कं य॥ गार्गं गार्गं वदिगमविगं। गायायिगं चयुर्कं
य। अत्र गालिगमयमगावद्गत् अत्रमानिगं ययत्रिगं। यकं कीर्णं विधुगं समुद्रिगं धूतमूत्त

ॐ ॥ ठकुरुविममूदिगं जलितमाय्याममहिदिगं लयिगं । वृद्धं वृद्धिगं मनिगं विदिगं यनियन्न
मयसिगावगमं ॥ डब्रीकृतमूब्रीकृतमंगीकृतमाधुगं यनिह्लागं । संगीर्णविदिगसंधुगसमाहि
मायधूमायगमं ॥ ङीलितगसुयधाशिनयधूतयनायिनयलितनिमानि । अयिगीर्णवर्णिगारि
द्वुगठिगानिसुगाथानि ॥ रुकिगवर्जितियसुयवसितगितिगखादितयामं । अयवद्वगान
जग्वप्रसुगलसुगिगं दुक् ॥ कविद्वकादिद्वयद्वयविद्वसुविद्ववंहिष्टा ॥ कियद्वदाहिहिष्टितयुथ

पीवनवद्रयकसाधो॥साधिवृद्धाधिष्ठसूत्रगत्रिष्टदसिष्टवृद्धिदा॥वाठवायनवद्रुनवाम
नवृदात्रकानिगाथ॥॥विगद्यनिष्ठवर्ग॥॥यकृतिप्रययाथोद्ये॥संकीर्णलिङ्गमूनयान्
कर्मक्रियागन्मागद्यगम्यसूत्रयत्रस्यवा॥साकल्यासङ्गवचनवावायवायवायवा॥सदे १०८
कृष्टेविगादुक्तुगून्वात्वास्याविल्लदणी॥गमथमुधाम॥निद्वानिमुदमथादम॥श्रुवः
दानं कर्मवृत्तं॥काम्यदानंयवान्नी॥वगक्रियासंवदनंमूलकर्ममुक्तमर्था॥विधूननीवि

साकीर्णंमृष्टिगंयत्रिवाविगं॥यथिगंयंयिगंद्वंविस्मृगंविस्मृगंनगं॥श्रुक्तगंविस्मृगंस्यान्वाय
यलिदिगंसमावलिगंयंयिगायूगयलिगाकीयिगावृग॥नरुनन्नासुनिषगाविद्वद्विक्त्रिगा॥
समा॥यत्रिद्विक्त्रुनिवृगंमूविगंमूविगार्थकं॥यवृद्धयुरुगन्यासुनिसृष्टरुगिगादुग॥निदि
ग्यायविगंमूठरुयंरुंजिनवूविग॥इतावदीर्ण्डइर्ण्डयगकायिगनिविग॥यावद्यानदिः
म्वल्लिक्त्रुनिसृष्टसुविगसम॥वद्विगंस्याद्वल्लिगंस्वीगंयुद्धमावृगं॥वृगंरुगंयथनिगिगं

[illegible]

धृवनं गयं लंघी लमावनं ॥ यथा किं ४ स्यात्त्रिणां लंघुवात्र लमिययि । सवनं सीवनं सृनि
विद्वन् ४ सृटनं रिदा ॥ आकाशानमहिष्ठ ४ संयदावदनातना । समृद्धनमहिष्ठाया कुरि
कार्थनादना ॥ वद्वनं धृदतथद्व ॥ आनन्दनसराजना । आयुक्तनमथात्राय ४ संयदाय ४ दय
द्विया ॥ यद्वयादावग ४ कान्ती बद्धुमा (लवग ४ क (ल (वा (वाव (ययवायाक रुवा दूमी वत्राव
मी ॥ डाव ४ ध्राय नयानाय यानिगी (लो रुमा रुमी । सृनिवृद्धोयथायागी सृष्टि ४ यृको स्रव ४ सव

विव्रासमृद्धो मूत्रं मूत्रं (लायमिगोयमा। पसूनि ४ ययव (ग्यान ययान ४ क्रमथ ४ क्रम ॥ डल्कथा
 निगयसंवि ४ (ध्वयविषय भूयय (क्रियायं क्रयं गीर्णु गिर्नोयुवतामूयम ॥ डनायडन
 यधाय ४ यय (लाययनयय ४ (निगद (निगदमादा मदडदगडदम ॥ विमदं नयविमल १०१०
 मूययकिन्नयुद ४ (निगदसुद्विद्व ४ स्यादहियायस्यहियद ४ ॥ मृद्विर्वधसुसंयका ठिं व
 ठमनविद्ववो। वीधनंयसिनिध्वन ४ स्वगीयहायगकवि ॥ निकात्रावियकात्र ४ स्यादाकात्रवि

व्याख्यानं

यनंमर्थकात्र ४ सयाकमि ४ सुिया ॥ विय (लाविकय ४ संख्या ४ संखयआदगजिय ॥ विंनयाया ४ स
 देकल सद्यो ४ संखयसंख्या ४ ॥ संख्या (थद्विवद्वलसु मासयानवत ४ सुिय ४ (यंक ४ गतसद
 यादि कमादगगु (लाकन ॥ योतवद्वयं ग्याय मिनिमानार्थकं गयं। मानं गुलाडुनियसु
 ३१ ४ यंवायमायक ४ ॥ गयग (लाक ४ कथास्त्री यलं कयवगुद्वयं। सवधूविमोदमाक क
 सुमुगलयन ॥ गुलासुियायल गमं कात्र ४ स्यादिं गि सुला ४ ग्राविर्गदगकात्रा ४ सु ४ ग्याद

नेनादिं वा ना

[illegible][illegible]

पृथममनुकमान् ॥ खलानि खलित्नी खलान् ॥ यथमानुशर्कं नृणां ॥ यामगाजनना वृष्णा याध्यागल्याय
धकपृथक ॥ अयिमाहसका नीष वामे ॥ धर्ष ॥ दिक् ॥ **संकीर्णवर्गः ॥** ॥ नानार्थः ॥ कयिकानादि
वर्गो यथागुकीर्तिना ॥ रुत्रिययाग ॥ यथयूययायश्चयिमयूग ॥ आका ॥ निदिवनाका लाकमुकुव १०१४
नजन ॥ ययय ॥ सिव ॥ लाक ॥ कलके ॥ इकायवाद्या ॥ गककानागवद्वकावर्क ॥ मूटिकसूर्ययाः
॥ मानवमवयसिव ॥ प्रयीसिक ॥ कंसि ॥ रमूना ॥ सागयलाकमुकुव ॥ यसंययरुकसिकुक ॥ ड

लूककवि ॥ ययू मूलायानयययक ॥ कमकुनोयकवक ॥ मूरगयविनायक ॥ किधूरुसविन
कोय गूककीटयवृष्टिक ॥ पमिकूलयनिकसिधकद ॥ गुर्यस्यय ॥ साइगीकलुरुनिम्वकर्त
॥ लरुसु ॥ लायिव ॥ अस्त्रिकाया ॥ अथाययकायागयथकइत ॥ सिमय ॥ दिवसामवलक ॥ सायथ
सिद्धक ॥ मिलकलकययि ॥ कावालीकं नाम ॥ यिय ॥ मरुत्युगुलूलूकयालयदिषूकीनिक ॥
वृकायगका ॥ सागक ॥ खन्ययिद्धलूकसुय ॥ ऊवारुक ॥ गग ॥ इयिखूनयगुसावरुक ॥ यययः

विष्णुजीकानाथमान्यामविदीशकः॥१॥लावकाः४कयिकाद्वि॥२॥सर्वविगोत्रिकः॥३॥पीठार्थवि
द्यालीकंसादलीकंनयियनरु॥४॥लान्नयावनूकद॥५॥कलवन्कल॥साष्टनमसुवर्गुर्नारु
मृन्नाहस॥६॥यत्त॥दीनानयिचनिष्कासीककासीसमलेनमा॥७॥दम्प्राथयिनाकासीधूलत॥८॥१०७३
नयन्तना॥९॥वनकानुकनव॥१०॥मयजालयकालिका॥कालिकायामनाकृष्टा॥११॥कलिकाक
रुषा॥१२॥कविदसाहुलोयमातीरुकाशीविष्णुद॥१३॥वृन्दकोवृयिमूखावकमूखान्यकवला

१॥आदाधिककोकटिकोयश्चाद्वन्त्रिकदला॥२॥यराकायदणीकार्यक्रमश्चय॥३॥रुनिगमवत्त
ययकवकटका॥४॥दिया॥सूत्रा॥यश्चाद्वन्त्रिकदला॥५॥यनामरुषयक॥६॥क॥काना॥७॥सयूखश्चिद्वन्त्रिकदला॥८॥
लित्वा॥९॥गिनीमुखी॥१०॥खानि॥११॥ललाटा॥१२॥कौन्सुदीन्द्रियायिख॥१३॥दुलिद्वान्तजुयिनिश्च॥१४॥खा
का॥१५॥लवृन्त्रिकनमय॥१६॥गु॥१७॥वायुविनिश्चो॥१८॥कविदग॥१९॥खग॥२०॥यग॥२१॥यदिस्वयो
ययूग॥२२॥कमूकवृन्दया॥२३॥यग॥२४॥विमृगवग॥२५॥यवाद्वन्त्रिकवयावयि॥२६॥यवाग॥२७॥कोसमन॥२८॥सानी

यादोबजसावि। गजविनागमानज्ञ। वयाङ्गकिलकपिय॥ सर्ग१४ खरावनिर्माक निशयाआगसु
ष्टिव॥ याग१४ सन्नरुभायाय आनर्गगतिभूक्तिभू। काग१४ सखम्मादिभगा बह्वरुकाकायया॥
यगकद्वि। वयं सियुगय। मकृतादिभू॥ स्व। मयपुतावज्ज दिङ्गुयुनिरुजल। न कादृष्टा १०७६
मियीयुं सि। गोलेङ्गविज्ञा। गरुका॥ मृ॥ ज्ञयावगसा। म॥ त्रतवाङ्गमूर्धगुमया॥ रंगपीकाममा
वीर्ययत्नककीर्तिभू॥ गाका॥ यत्रिय१४ यत्रियानु। याद्यावुं दधुसां यय। मूल्ययूजाविधातयोः रू

लोयर्षीआदिकयु॥ निर्यायातस्त्रिकोकात्तविहावात्तवया१४ द॥ १४॥ व। पुदिगादो। पुकादो
सुगोवर्णकुवाकव। यमलीनायिनयुं सि। व१४ यामात्रियगिभू॥ ड१४ मयादिताम्रिया दाव
रुवाकवाकुवा१४ रुविनीस्यान्मृगीरुमयमिमाकनिमायया॥ गिभूयंतीयद्विनि१४ मृ॥ स
मृयिवस्मन१॥ रु१४ रुहायिमासदृशयमाकव॥ व१४ व॥ वलिकय॥ ययिविधलि१४ सवायय
कवान्॥ कव॥ विर्यांकीलरुडविनकुवर्नवर्न। गवर्णगुरुवकिवा१४ पीयर्णकमलपि

या विद्यादिमन्त्रादुषु गीर्द्धी वीर्यवर्गिषु । अत्र (ल) हास्यवर्गसु वीर्यवर्गसु दण्डसगिषु ॥ सु० ४
सर्वथाथका ॥ काकया उववव ॥ यमादण्डमर्यादा ॥ मयकायमादुषु ॥ कवलासाध
कनमकगुणगुणदियद्यपि । याधुयादसंगनला समयाधयमूगमी ॥ यधुयाधयवानान्न ॥ १०१ ॥
समद्वनलमन्त्रय । अत्रदियुविद्यादीयागुणयुगुणरुदकया ॥ यवलीकमनिमार्ग्या यकना
मुवव ॥ या (थ) सीकी (धु) निवितागुद्धा वीनिदीगुलामुवव ॥ लाना ॥ दवसुय्याविवसुनो सवस

कोनदाधुवी ॥ यकितागुणवर्गको सकको हास्यपदि (लो) । अन्म्यामोधूमकगु जीमूमीमय
यवमी ॥ रुको गुयागिनकगु मवमी यवनामको । यकादुसियकसूग रुकाधमविद्याद्वि ॥
यानयागुगिनी ॥ याग ॥ यग ॥ याधुनकवमूग । यरुदधयकगु ॥ याधिविगनयसूग ॥ सु
यमि ॥ कावुरुदयि रुरुगुमिधवमूय । मूद्धाहिविका रूय । यिमगु ॥ सुवसुमयिव ॥ विष्वाव
यकितायको सुनसुविसान (थ) । यक ॥ यक ॥ यिद्विद्वाना वरुणा मुनिद्वगन ॥ ककायागसा

[illegible]

नलोत्तमृष्टे श्रीवाङ्मयमसिध्यां। गुरुत्वायानुष्ठितं श्रीवाङ्कान्तं लयसंगमयिमा॥ अथूक्तं
 वाद्यं ४ काशां मूलतन्मकवज्जटा। वृष्टिं ४ रुतममृष्टो वृष्टिजालकिदर्शन॥ वृष्टियागवृष्ट्या
 ४ मृष्टं निश्चितवद्वलिनिष्क। कष्टं वृष्ट्युक्तं नद्वयमकामदवृष्टं॥ वृष्टोवायान्ति (शेष)॥ एता
 ४॥ नीलकण्ठं ४ गितं यिचयूं सिकाक्षान्क ० नं वृष्ट्यान्कं वृष्ट्युक्तं॥ निष्ठा निष्ठा निष्ठा॥ का ४ का
 ४ कर्षेष्टिनीदिनि। गितं वृष्ट्यान्कं वृष्ट्युक्तं॥ कनिष्ठा ४ गितं वृष्ट्यान्कं॥ ० का ४॥ दलोत्तमृष्टं वृष्ट्युक्तं

स्याद्भुजो गन्तव्या कथा ॥ सर्वमसाय गूया जे रू (ग) वा यन्निगन्ता ॥ नृजवंगाला
कायि नादी कान्तियिषट्क (६) ॥ का लो मी दलु वा (६) ॥ वगवसववा निषु ॥ स्याद्भुजो मन्त्रा रु
त्र (६) मय मूलव विचन (६) ॥ स्यात्पमी रु या वोटं यगा टं रु ग क रु या ॥ न क सु लो विषट्क टी ॥ १०१२
वूटो विना सु सं रु गो ॥ रु ना ॥ रु (६) व क रु (६) ग रु वा (६) व नि सु ग ग रु ॥ क (६) नि गू रु रु
न्या (६) सं द्या म यु थ म ग ल ॥ य (६) द्या म दि वृ ल रु रु गो मू ला य न यि व ॥ मो द्या दि द्या वि न स व

यन ॥ का द्या जी नि ॥ सामान्य ज न ना ॥ य द्या व स्या न्द या नी ति त्री वि ठि म्ब य वा स या ॥ ड ग य ॥
वि न म या यि रु ना त्व नि ग य य (६) ॥ वी (६) रु द यि म रु नी रु नि रु स नि स मा दि ॥ न दी न ग या
नो ग म नां रु ग व स थ स न्द्र ॥ स (६) स रु ना यी सु मि नि ॥ रु य द्या मा व यि नि नि ॥ न व न र्द्वि ग
रु रु व नि नि ना य रु ग य ॥ ज ग नी ज ग नि गू रु द्या वि (६) य यि नि ना य यि ॥ यी कि गू रु द्या यि द न म
स्या म य रु व यि वा य नि ॥ य नि र्ग नी य मू ल रु य रु नि ॥ य रु रु द या ॥ य रु नि र्ग नि नि नि (६) व को

निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
यांचथाविनिगुच्छिः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
रुद्धयि ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ १०२०
मृग ॥ कल ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
नी ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥

वृद्धयश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
वृद्धयश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
वृद्धयश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
वृद्धयश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥
वृद्धयश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥ निष्कामाश्च वृद्धयः ॥

युवमृगः युजिनवा यरियुक्तयनः कृतः ॥ निधनावाधयावानो नमस्तु शीयवर्मयनः । ज्ञानान्न
यद्वृद्धांसूत्रविगाडसिगास्वमी । वृद्धमरुषायागयन्ना आहतोसादवार्तिनी ॥ गान्ता ॥ अर्थारि
धयवेनमु सयाजननिवृत्तिषु । निदानागयथास्कीर्थमृषिशृङ्गजलरुनो ॥ समर्थप्रियुगाकि १०२१
सुसमृद्धा । र्थरिगयित । दगमीस्ते कीटावागवृद्धीवीथीयदवायि ॥ अस्मनीयलषावास्सु य
स्सुमीयानुमानयाः ॥ अस्मदविद्यायार्थसुः ॥ सस्मवात्रास्मिन्मृगो ॥ धनका ॥ अरियायवलोचु

नावदोजीमृगवत्सनी । अववादीरुनिदाहूदायादीसुगवाधवो ॥ यादावध्माधिगुर्याज्ञाध्वन्यान्ध
कोममानदः ॥ निर्वोदाजनवादयि । गदाजम्बालगयथाः ॥ यावाववृदिगगातर्थाकीदादान
। एव । स्यात्यसादानुवा । एव सुदः ॥ स्याद्वंजनयित ॥ गमहाध्वान्दयि । गमविन्दारुध्वयाभादव
न्मदः ॥ याध्माध्माजलिजेववृषा । इकवृदाप्रिया ॥ सुसन्निगृह्णानर्सीराषा । क्रियाकावाजिनास
स्रधर्मवरुसूयनिषग । स्याहमीवत्सवगवन् ॥ यदववावसिगिगा । सुनलश्चिखिवमुषु । गम

अदं सविता मान यमिहा कृत्यमा स्यदं ॥ गिच्छिह मधुनो स्वादु मृदुया नीकु को मलो ॥ मूढान्यापद
निर्हो ग्रा मन्दा ॥ सुद्धो उभा नदी ॥ यथया युमिहो विद्व सुयमन्को विष्म नदी ॥ दान ॥ ग्रामावटश्च
न्य (या) वा वृक्षमव ॥ कायड ननि ॥ पर्यादा न धमार्गश्च विव (सी) वीव (सी) वगो ॥ पत्रिधिर्यद्विष १०२२
नवा ॥ शाखायामयसूर्यक ॥ वधकं यमनं यग ॥ पीठा विज्ञानमाधय ॥ सु ॥ समर्थननीवा
कनियमाध्रममाधय ॥ दासाग याद नूर्वध ॥ स्यान् प्रकस्या दिवूनश्चन ॥ मुखान्यायिनिनि

लो युक्तगस्यानुरक्तन ॥ विधुर्विष्णो यत्नमसि यत्रिद्वद विलश्चवि ॥ विविर्विष्म नदी वयि यत्रिधि ॥
यार्थनयन ॥ वृक्षवृद्धीयत्रिगयि सुन्व ॥ समदययिच ॥ द (ग) नदवि (ग) य ॥ श्री सिधुर्नासत्रिगिधि
यी ॥ विधावि (सी) यका नय साधु नम्यायिचगिष ॥ वधूजाया मूषा मूय सुखालया ॥ मूर्ग मूदी ॥ संभ
युमिहामर्यादा प्रडा संयथय ॥ सुद्धा ॥ मधुमययुष्वन स कोदयान्नक मस्ययि ॥ गुरुपियू समुन्न
दो यत्रिर्ममन्यगविगो ॥ वधुर्वधुर्विद्वय निद (ग) थावर्तविग ॥ गुरुविद्वनायावद्धो यत्रिद्वो

[illegible]

दृष्टव्यमनस्यर्थं॥ निषिद्धं लक्ष्यं॥ धाना॥ काया॥ निश्चमृद्भवद्युक्तं॥ विषयासाविस्मयवत्प
यश्च यावत्कथं वि॥ सामासाद्य वा स्यात्॥ यं सिमा॥ अजिगमिषू॥ अहिश्च॥ अस्युदायाश्च॥ गरुडो
यन्वि॥ प्रिया॥ याना॥ कच्छन्वयव॥ स्नानं नदीवृक्षपिसमग॥ यसन्नरुल्लकाद्यक्का॥ उच्छ्र
वक्षानया॥ च्छाना॥ ककिगाश्चावद्विज्जा॥ दन्तविषा॥ पुजाद्विजा॥ पूजाविष्मूहवच्छागा॥ गम्यः
धनिवक्ष्यजा॥ धर्मवाजो जिनयमो कूजादन्तपिनप्रिया॥ वल्लजं कृष्णपूजावि वल्लजावन्नृद

र्गना॥समन्वय॥एव॥एषाजि॥यथास्यात्मनकोजन॥अवेर्गखगभाक्षेत्रसकनित्यंनिर्जगिषू॥
जाना॥यस्यात्मनियवी॥एषु॥कृष्णवायलिङ्क॥संज्ञायाञ्चगनानाम॥ह्यार्थे॥अर्थसूत्रः
ना॥श्रुता॥काकरु॥गणु॥कनदो॥गजगधु॥कटी॥गिषिविषुमुखवल्गो॥दृश्यर्मलिमदृष्ट १२५
न॥दवगिलिन्नायिल्लु॥दिष्टदेवपिनदया॥वसकदृ॥कदृकार्य॥विषुमत्तवनी॥कृथा॥
त्रिष्टकमाशुकराव॥वचिष्टु॥गुरु॥गुरु॥मायानिष्ठतयलु॥कृगवानुगवागिषू॥अथाद्यः

वद्ववर्षव॥नकाद्याउक्तमरुहो॥वर्षकादाद्यनाद्यना॥अधिमानार्थादिदर्थ॥ज्ञानयल्यदि
सया॥द्यनामधमूर्तिरु॥ए॥विषुमूर्तिनिवक्तव॥न॥सूर्ययरोवाजा॥मृगा॥कृष्णनृया॥
वालिन्नानरुकीमरु॥प्रवन्नामपिवाहिनी॥दि॥योवदुगणिगो॥वदायामपिकामिनी॥त्वय
कृथावयिगनु॥मृना॥आजिद्विकायिव॥कडुविस्तवथा॥वफी॥विगानं॥विषुगुदुक॥मंदथक
नर्नकृष्णकमावूयनिमक्त॥ए॥वदसुखं॥गथावद्व॥वद्वविषु॥यजायति॥रुत्सादनवादिंसा

यां सूचनवापिगं धन। अर्णवर्नयमी वाय यवनाथाय नार्थकं ॥ अंजनं तं कर्तुं भगु निश
नावयवधयि। स्यात्कोलीनं ताकवाद यद्धय श्रुदिय किं ॥ स्याद्दयानं निःसुब (एव न ह्य
यथाजन। अथका (ग) सिगो कर्तुं कीणादावपि यवर्न ॥ उक्तं यव यमलु सन्निविष्टा इमपि वा ॥ १०२३
कर्तुं यमिना (अथ निवा वा वर (एविय ॥ मात्र (एव मृग सी स्या व गगोदयार्थदायना निर्वर्तनाय
कवला नवयसूचसावर्न ॥ वं (अथ दधन गगोदीय दधानूनायया ॥ सुलात्रय स्याकल्य

नागानीमश्मगग। समया ८ यथात्रान कालसिद्धान्तसंविदः ॥ वसना न्यतु रूदेवं विद्यदित्यन
यायुयः ॥ अथयानिकमकृदु दावदं उयाथायदि ॥ यद्वायया ८ संयवाय ८ पूषसुधु पुत्रयिय। य
अदवस्ययितुं समवायश्चमन्नयो ॥ संवागं च निव (एव सं स्याय ८ यथायान्ममी ॥ विषं रुयाः
व्यायमा (एव विवा (एविसमकृय ८ ॥ विषयायस्ययाङ्गान् सुगगादादिकश्चयि ॥ निर्यासयिकवाया
मु। मरुयायिपुनिधय ८ ॥ यायारुन्नाक गमन मन्यदं च कनीयुषि। नरुयायस्ययागुर्धं पर्यं गय

थानथायाः। वीर्यवत्तयरावोवद्वर्गुरुवागुवाधय॥ वृद्धास्मिन्नगुरुहे। गोराग्यं कर्मगुरुगुरुं।
क। गनुरुमागोऽयं विगल्यादनि कायिव॥ वृषाकपायीणी गोमयो बरिखानाम। ग। रुथाः। अ
नरुनिः। कृतिः। गिक्कायूजनसंयथावर्णं॥ डयाः। ययहोवमी कविरुदोद्वर्गमो। ॐ कृमना १०२६
रुवो कामो। गोमो। गोमोयवाकमो॥ धर्मोः। वृथयमन्याय सरुवावावमामयाः। डयाययूवशू
वमुडयावावायूयकमः॥ वनिश्चथः। पूर्ववदा निगमानागवावलिक। नेगमोदोवत्तनामानि

नश्चावृसिगिषू॥ गदादियूवावृदं यिचामः। कानोवविक्कमः। उल्लानकृकं वसनाधुजामिः। स्वसृ
कलस्रियाः॥ किनिः। कांथाः। कमायूककर्मगकदिगिषू। विषुमोदुनिगकृधू। ग्यामास्याकृः
विवा निगता॥ नलामयूकयूडा। अरुवायावन्यकठुषू। सूक्ष्ममवात्ममयाशयधनयथमगिषू॥
वामोवन्नुयगीयोद्वावधमोनूनकृसिगी। जीर्णययनिरुकं वयागयाममिदं दयं॥ याकाः॥ उव
इगकृजीगाओ निलयायवयोदयो॥ गृधुयोदिवत्तग्यालो। गारुथो। गारुजद्विषो॥ यजन्मोनस

ददन्त्याद्यादयेऽस्वामिर्वेद्यथाऽ॥ निश्चयऽपुश्चकलियूगपर्यायावसरेकुम्भः। पश्यथाभीनजयथ।
ज्ञानविष्णुसकलसू॥ निश्चयिनिर्नवेनशुद्धोदानम्यासायः। एयिच। वासनीवियदिर्जुं। गदावकाम
अकायज॥ यश्चादित्तानिर्किंजल्कगत्वायीं। गद्यापीयसि। कुंदनवादनान्दानवर्षदहयमाव १०२॥
याऽ॥ गृहदहविष्यरावाक्षमान्यधयुषः। सनिव। गायसंस्कृतं। लक्षविद्रुपधनयाऽ॥
यसूनयुष्यरुलया। निर्वर्नकलनाऽयाऽ॥ अद्भुतनसंविद्यनवनसलितकानन॥ गलिर्न

विनलसक वायलित्तानि। धारुव॥ समानाऽसत्समेकस्य॥ विद्युनोखलसूयकी। हीनन्यूनावून
गञ्जोवगिधूवोगवसिनी॥ अहियन्नायवादाहि। ग्रसुयायद्रगावयि। कलायारुष। एवह
गृहीतसंरुगयिय॥ यत्रिकुदयनीवायऽययूकोसलितसिमी॥ गायू। ग्नाययनि। गायोह
वविष्णुवृषाकयी॥ वायावूषाधूकगियू। चनमाद्भुतनद्वयं। गत्यं। गद्याददानवू। संवयिवि
ट्यामिरी॥ याकनूयसूयारि। नूयावूषमनाहूयाऽ॥ रुयर्लिगा। ह्यमीकुमी। वा। रुदधक

कृयी॥ नव॥ यूपीमिन्नरु॥ स्यात् कृमिन्वाद्यनिर्गक॥ वाका॥ अनुनारुवसखा॥ गी॥ धर्वादिवा
गभयन॥ कर्तव्यतावल्लय॥ गी॥ धिनिर्गकोमयसूत्रको॥ पूर्वान्या॥ लि॥ ३॥ यामाह पूर्वदत्तयिपूर्वजान्
॥ हाका॥ कृ॥ की॥ य॥ ट॥ रु॥ मू॥ र्जा॥ ॥ ठि॥ री॥ उ॥ नि॥ पु॥ वा॥ लि॥ ॥ ॥ र्की॥ री॥ मू॥ ॥ ऊ॥ री॥ रा॥ वो॥ गी॥ इ॥ व॥ य॥ गि॥ ला॥ य॥ नो॥ १०२८
॥ कृ॥ दि॥ रू॥ ॥ रु॥ का॥ ग॥ रू॥ वि॥ सं॥ रु॥ ॥ य॥ ल॥ य॥ यि॥ व॥ ॥ म्या॥ इ॥ यो॥ दू॥ द॥ हि॥ ॥ यो॥ सि॥ स्या॥ द॥ कृ॥ दू॥ द॥ हि॥ ॥ म्पि॥ यो॥ ॥ स्या॥ न्म
हा॥ व॥ ज॥ न॥ कृ॥ दी॥ र्वा॥ कृ॥ सं॥ रु॥ क॥ न॥ क॥ य॥ मा॥ न्॥ कृ॥ गि॥ यो॥ यि॥ व॥ ना॥ हि॥ र्ना॥ सु॥ न॥ हि॥ गी॥ वि॥ व॥ म्पि॥ यो॥ ॥ स॥ हा॥ र्वा॥ स॥ दि॥ स

यव॥ गि॥ य॥ य॥ कृ॥ यि॥ व॥ न्म॥ रु॥ ॥ मा॥ का॥ ॥ कि॥ न॥ र्वा॥ क॥ म॥ य॥ द्वा॥ व॥ वि॥ लि॥ मा॥ य॥ न॥ व॥ क्ति॥ या॥ ॥ कृ॥ यो॥ सूर्यो॥ यि॥ यो॥
का॥ नि॥ ॥ य॥ नि॥ वि॥ म्म॥ म॥ ना॥ ग॥ य॥ ॥ क॥ य॥ य॥ का॥ रु॥ म्या॥ दि॥ ॥ का॥ यो॥ म॥ ॥ कृ॥ रू॥ र्वा॥ ध॥ न॥ कृ॥ य॥ क्ति॥ या॥ द॥ व॥ ग॥ या॥
मि॥ व॥ रु॥ य॥ ध॥ ना॥ दि॥ हि॥ ॥ ज॥ न॥ र्म॥ स्या॥ ऊ॥ न॥ वा॥ द॥ यि॥ ज॥ य॥ ना॥ कृ॥ य॥ न॥ यि॥ व॥ ॥ ग॥ यो॥ धी॥ नी॥ व॥ व॥ क॥ यो॥ क॥ न्यो॥ म्कृ॥
नि॥ वा॥ म॥ यो॥ ॥ आ॥ न्म॥ वा॥ न॥ न॥ य॥ मा॥ र्था॥ द॥ ॥ यो॥ य॥ र्वा॥ गु॥ वा॥ द्वा॥ यि॥ ॥ वृ॥ यो॥ य॥ ग॥ स॥ वृ॥ य॥ यि॥ व॥ दा॥ न्या॥ व॥ न्म॥ वा॥ ग॥ यि॥ ॥
ना॥ यो॥ यि॥ म॥ र्वा॥ सो॥ म्या॥ उ॥ सु॥ द॥ न॥ सा॥ म॥ दे॥ व॥ न॥ ॥ वा॥ का॥ ॥ नि॥ व॥ दा॥ व॥ स॥ वा॥ वा॥ नो॥ म्कृ॥ नो॥ य॥ कृ॥ ना॥ ध॥ नो॥ ॥ रु॥

बुगीयनियेवाओ दायनोयुगसंगयो॥यकाबोरुदसदलोत्ताकावाविगिताकृती॥किंनबूया
नगूकषुमबूधमववावनी॥गूदयादूमलोत्ताके॥सीसनादीयथावनी॥क्षानाविदानवाव
गावलिहसंगव॥कना॥यदनासंगनानीबूधभाजुमा॥कवाभूवि॥जुआनगुं॥गस॥का १०२०
न्याभमगुनोचमवनी॥स्रगुयिवा॥यविकन॥ययद्वयत्रिवावया॥मूकाउदीवताव॥सा
कृपावायोसगुणिसू॥कर्व्वेथयगिह्वाजिसीविकायसुसंगन॥वदरुदगुकिवादमंगामिग

नवावपि॥मखयूययवर्गपिस्वबूयुर्धवावसुन॥जुगमवमूर्यववगजन्धानीवगजिग॥जु
दिहवाहिया॥गतयोयैर्मनहनयिव॥याऊझमयनीवाव॥खपूका॥गयत्रिद्वद॥विह्वावि
टयीदरु॥मू॥॥यी॥अयमासनी॥द्वानिदा॥कृयमीहान॥यगिह्ययाननन॥वियूलनकूलवि
व्रीयसु॥स्यालिंगलणिसू॥सावावलसिनी॥गयन्यायक्रीवववगियू॥द्ववादनायूककावय
॥अयूमदवावनी॥महाव॥अदुर्गय॥थकानावैयन्नयैसर्क॥मत्सवानागुरुद्वयमदकुयव

यासिष्वाद्यवाहृगवनाधृगिष्वाहृवमनाक्षिप ॥ वंर्गाकवकवीनासुगवृहदघटयना। ना
 वमूजघनरुसू. सृगयुनिमनाक्षियां ॥ यमानिलयुर्वडाक विष्वाहिंहीनुवाजिष। शुकादि
 कयिरुक्कषू. रुविनाकयिलगिषू ॥ गकवार्कयना। गयि। यादास्याद्यायनगनी ॥ ७०३०
 कसूनासूया. रुंदानिदायमीलया ॥ ४॥ धाणीस्यादूयमाना। यिद्धिनिवद्यामलकयि। रुदावांग
 नदीवग्म। सनयाकंटकात्रिका ॥ गिष्वाहृवमनाक्षिपि। रुदंमागायविष्वाहृ। अत्यययनिमा।

नमोदयानयि॥ वक्रलाः कुरिकागवा वक्रलाग्निः निगोविषु। लीलाविलासकियथावपलागक
त्रायिव॥ ॥ गानिगमुसिकीलालं मूलमायगिरुन्वयाः। जालं समूहश्रुतायागवाककावकावः
यि॥ गीतं सहावसदुरुसयादुगुगुनरुलं। इदिर्नगवृजः क्रीयं समूहयटलं नना॥ अथः सव
यथावपुः गलं स्यादामिषयलं। यथायिकमयूः अथूकालं विषुनिदिग॥ ककूलं गीकुरिः क
॥ अथुनागुवगुयथा। निधीगकवलमिति गिलिं गलं ककूलयाः॥ यवालमंकवयापुः विषु

मूलं कुरु यिव ॥ कवालादं कुवुं गवा नो दक्षयथ गल ॥ मूर्खं कुरु यिवान्त ॥ स्यान्नालं शलसः
 रसुया ॥ वान्ता ॥ दक्षो दक्षो वना न ॥ वक्षी जन्म रुवो ॥ मन्त्री मन्त्राय ॥ सवित्री यनि गशि
 ननाथवा ॥ अथय ॥ नीलमया क्रो आह्वाना नाथवा रुवा ॥ हाव सत्व स्वहावा हिषाय वक्ष १०३१
 त्मजन्मसू ॥ स्यादूत्याद रुतयुथ युसवा गरुमायन ॥ अविष्ठा सयद्रवयि निकृता वयिनि
 क्रव ॥ इत्सकामर्षथा निष्ठा युसवमरुत्सव ॥ अनुराव ॥ यरावय सगायमनि निश्रय ॥

स्वाङ्गमरुतः ४ परुतः ४ स्मर्तवायापलद्वयः । कुवाह्वदक्षीवन्दु निधिरगभाश्वनगिषू ॥ स्वाङ्गमावा
त्मनिस्वीति स्वात्माया स्वासिर्माधिनः । स्त्रीकटीवमुर्वी (धयिनी वियत्रिणययिवा ॥ गूडायां वियननय
गमुवात्रगयामनः ॥ निवाग्मेवीरुववया द्द्वकलरुयूमथा ॥ इयासुववसाययि सत्यमस्त्री
युजनुषू । स्त्रीर्वनयूसकर्वरुवायतिद्रमविक्रम ॥ द्वीवि (मेवेन्धमनूजी द्वीवनाहिमनोन्ध (मे
। द्वीवाजीयूजमघाओ द्वीर्व (मेकलमस्त्री ॥ वरु ४ युका (मेवीका (मे निर्व (मेरुतिहायथा ॥

[illegible]

(५४) सुकृतवृषरुवृषः॥ का॥ गायत्रीकृतं नखम् विधानार्थं दृष्टव्यम्॥ अथ कृतं विरुक्तं कथा
 कर्षाथाकमिन्दिय। नाथूगांगकर्षयक। अतदावकलिदम्॥ कषूवाकाकवीवागि॥ कषू॥ क
 कृत्याहिवायिनी। यूरुवावगन्क्रियायां च। यो नृषं विषमयुव॥ उवादानवा। मिषं स्यादयवा
 (५५) यिकिलिषं। स्यादृष्टोत्ताकवाली। गयत्तनवधमक्रिया॥ यकानृषदणीयज्ञा। हिक्तासवा
 धनारुति॥ सिद्धं। गायत्रीविषयन। त्यक्तं कान्तां निरुद्धम्॥ ४॥ पश्यन्ति विरुक्तं यक॥ नृकृत्यवना

त्रिक्र।॥साक्षा॥नवि।धनवृद्धोहंसोसूर्यवक्त्रोविहावसू।वसोगन्तकवर्षोदोसावज्ञाश्रुदि
वोक्तम॥गृह्णावादीविषवीयगुहनागदवनस॥पूयूनसावर्गसोवाकर्ण्यूनयि।गव
न॥दवरुदमलेन।मोवसूननवनवस॥विष्णोवध॥मीत्वा।दिगागसादिदृष्ट्या॥१०३३
लान्तमयार्थनात्सुअदिमात्रीयादिकर्मय।यसूनध्यायिरुयायोनादस्योनादसीचन॥का
लारासानेय॥त्रिआगिरुधागदृष्टिषू।यायायनावयावाग॥खगवात्यादिनाथय॥न

ज॥पूत्रीययावर्षोमरुदसूतवगजसा॥वजागु।लयफीयुधवाहोक्षकुरु।गतम॥वृन्द॥य
अरुिताययनय॥कृदुदिकर्मय।सहावर्तसहामा।गनरु॥खंधाव।गानरु॥डाक॥स
याधय।श्रीका॥यय॥कीर्तययामुत्र।डाजादीकोवलतथाग॥न्दियनिम्रगमय॥गज॥
सहावदीकोयवलतुक्कयगमिषू।विद्वान्विदश्ववीरुत्सा।दिषयनिगयत्वमी॥वृद्धयग
स्यार्थायान्कनीयासुयूवात्यया॥वनीयासूत्रवयया॥साधीयान्साधूवारया॥हा

का॥ दलपिवहनिर्ब्र॥ (भा॥ यत्रागमकोदयाग्रहा॥ द्वायायीउकाथवस॥ निर्यूहानागदकक॥
कुलासूग॥ आदिन॥ (मो॥ यत्राह॥ यग्रहायि॥ यत्रीयत्रिगनादान॥ मूलयाग॥ यत्रिग्रहा॥
दानययिगृहा॥ (भा॥ मयात्राहायत्रिग्रहा॥ ब्रूहावृंदयादिर्वृ॥ यात्रीद्वर्कसुमायहा॥ ॥ १०३४
यत्रिग्रहदनुयाह॥ (र्थ॥ यत्रिवहोवाया॥ यत्र॥ ग्राहीषद॥ (र्थ॥ हियाफीसीमा॥ (र्थ॥ अयुयागज॥
यायगृहसुमोवाक॥ यासुखाकाववी॥ ५या॥ यायकूसषद॥ (र्थ॥ क॥ विनिर्ह॥ स॥ ननिन्दया॥ ॥

भा॥ च॥ व॥ ल॥ ध॥ ग॥ म॥ स॥ या॥ गु॥ क॥ रु॥ य॥ लि॥ झ॥ क॥ ॥ (गो॥ ना॥ व॥ (सि॥ ग॥ पी॥ न॥ व॥ द्र॥ का॥ र्य॥ या॥ व॥ क॥ व॥ ॥ ३००
क॥ ०॥ न॥ यि॥ शा॥ द॥ व॥ स॥ द॥ यि॥ वा॥ य॥ व॥ ॥ अ॥ ना॥ क॥ ल॥ यि॥ वे॥ का॥ (गु॥ वा॥ ग॥ या॥ स॥ क॥ अ॥ क॥ ल॥ ॥ ७००
या॥ ॥ (अ॥ ४॥ ४॥ य॥ रू॥ व॥ ॥ स्या॥ द॥ न॥ रू॥ व॥ ॥ प॥ र्वा॥ वि॥ य॥ र्य॥ य॥ (अ॥ ४॥ दू॥ ना॥ ता॥ सा॥ रु॥ मा॥ ॥ य॥ वा॥ ॥ स्वा॥ द॥ यि॥ यो॥
गु॥ म॥ य॥ नो॥ कू॥ नो॥ क॥ ०॥ न॥ नि॥ द॥ यो॥ ॥ ७००
वा॥ ॥ ७००
गु॥ म॥ य॥ रु॥ द॥ मा॥ ॥

गङ्गा काष्ठपूजा विधी लव ॥ कुमा नानदसा ॥ काल श्रु (ध) पिय (ग) कलि ॥ श्याग्वृन् (ग) पिक
 मल ॥ यवा ले पिय कं वन ॥ कवायदा वया ॥ यूसि वलि ॥ या (ध) गज क्रिया ॥ स्तेल्य साम ध्य सेन
 पू वल ॥ काक सी त्रि (ध) ॥ वा ग्ल ॥ यूसि वाया या म पिवा गा सरु गिषू ॥ रुय लि न ॥ १० शाल १०३
 ॥ यूसि श्याय द सर्य या ॥ मला मुी या य विट किदा ॥ न मुी भूल वृ गाय र्थ ॥ न की वा पि द्य या ॥ की ल ॥
 वालि व धी क र्य किषू ॥ कला गि ल्य काल रु द ॥ याली सखा वली अ पि ॥ अवा व वि कु मो व ला का

सामार्ग का र्त्त व वा न (ग) ॥ अलखा श्रि ग या श्र य कल र्ग (ध) लि रुय र्थ या ॥ या ग्य रुा जन या ॥ या
 र्ग य र्ग वा रु न य द या ॥ निद भ र्ग थ या ॥ न म् ॥ ग म् माय वला रु या ॥ श्या ऊ टी शु क यो न र्ग
 क र्ग य ली ग नी व या ॥ मूखा (य) काल रु ल या ॥ या र्ग (ग) र्ग उ ना मि त्र ॥ स ग मा द न य रु स दा
 दान व न पि व ॥ अ जि न विष य का य र्ग व र्ग थ ॥ मि वा स मि ॥ रु कं ना ध्र य कं व लु मा द पि की
 व म मू व ॥ स्र प रि रु त्रि व द दो दान मा ग पि (ग) य र्ग ॥ रु द र्ग रोग क र्ग व द न नि क मू य

क्षेत्र ॥ यथात्रिकमययया ॥ आगमनगनयव ॥ मंदिरं वाथनाक्षी विषयस्यादयदव ॥
दनाभिर्यारुयग्वजुवडाक्षीदीवकयनो ॥ गनुं यथा नैसिद्धान्त सूरवाययनिच्छद ॥ डोणी
वध्रामनद ॥ शु ॥ श्रीगीर्णयनासन ॥ यक्षनंकनिरुक्ता ॥ यवायरा ॥ मुखजल ॥ यानिख ॥ १०३/६
रुलपदमी ॥ योषधिविषया ॥ अनुभवमवकाश ॥ वधियनिधानान्कद्विदताद ॥ य ॥ विडाः
लीयविनावदिववसनम ॥ अनुनात्मनित ॥ मसुयिथि ० ॥ वंवाजक ॥ एव ॥ यविनागव ॥

नाम्नाकर्तृविहावयय ॥ अनुवद्ध्याथय ॥ लु ॥ कर्तृमीमनिगुवकायाकि ॥ पादिगान्यग ॥ ॥ दं
दध्ववगवायध्ववगवतुसमादग ॥ कान् ॥ सूर्यान्दययाय ॥ पूर्वोय ॥ पूर्वकायिय ॥ वटक ॥ अनुवा
वल्ककवकूदंगक ॥ यंखान्यव ॥ समुद्र ॥ विययदयदावट ॥ कादावरुदयदा ॥ यिंठ ॥ गंठयिय
लुवग ॥ ग ॥ कर्तृगालगुगवर्ण ॥ यकि ॥ ल ॥ दू ॥ ॥ दकिसीमकठविता ॥ नाम ॥ य ॥ झीथवददा ॥
कासमेदोदनि ॥ कूद ॥ रुनमूयोसयूयको ॥ अनुय ॥ कजियना ॥ रु ॥ कलाय ॥ कवकदवा ॥ यूनक

पिय॥ मन्त्रवीचर्चनीयावीक्षानालुदायसिधला॥ लाकालिन्दायगंधूषा॥ गृधसीयमसीमसी॥
 सीलिङ्गसंग्रह॥ ॥ यूँस्वसुहृदानूचवा॥ सययाया॥ सूना॥ सूना॥ स्वर्गयागमदिमद्यादि॥ इ
 कलासिगानावय॥ कनर्गजीष्टदादक॥ क० क० नखसुना॥ अक्राहना॥ यागसंख्याका॥ १०३८
 धीपिष्टायाश्चनिर्यासा॥ अस्त्रनाश्चवाधिका॥ क० नूअशुवसूनि॥ हिलाशुनूयिनामना॥
 कषणरुमनायाना॥ यद्यदना॥ अमीअथ॥ यथप्रयसटायाका॥ गमशाखाश्चवत्सकया॥

यान्वाययसमादानगननसमूहय। स्वस्वाणी८८मयूष्मदोयकथर्लनयनयानि॥स्त्रि
त्यध्नयविगर्कयकुस्याइदयवधन॥६॥सकृत्सलोकवात्रस्यादावाइनसमीपया॥यनी
श्रीचनमयश्चादूगायार्थविकन्यया॥पून८सदार्थया॥१॥अन्ताकात्ययककुलया॥॥
खदानूकंयासनायविमयामनु॥६॥वग।रुनरुधनूकंयायावाकानरुविषादया॥॥य
नियनिनि॥योवीयालननादोययागन॥१॥००निरुदुयकन॥६॥यका॥६॥दिसमाकिष॥

याद्यांयुवसात्यथमयूनाथमगच्छयि। यावत्तावच्चसाकल्यवत्सोमानवधाम्बल॥
 मङ्गलाननननाननरुपयन्नाकास्त्राश्च। अथ। वृथा निवर्था विद्या। नानानकारुण्यार्थः
 या॥ ४॥ नूयच्छयां विकल्पवयाश्चासाह। अथायनू। यन्नावधाम्बलानूहानूनयामनु। लननु॥ १०३॥
 हसमूयययन्नीकासंरावनास्यपि। उयमायां विकल्पवासा मिलद्वंशुयन्॥ अमासहसमी
 यवकंवात्रिलियमृद्धिय। नूयत्तुमर्थयावत्तूननगर्कर्थनिश्चय॥ हृष्टीमर्थसूयजायं किंपृष्ट

योऽशुभान्। नामयाकाशसंहायाकाशयगमकूत्सन॥ अर्त्तद्वयवयवार्थकिंकिवावयव
 कां। द्विविक्तकृयत्रिय। प्रसमयान्नि कमध्या॥ यूनवयवमरुदनिर्निधयनिवधया॥ स्यात्य
 व। धविवागीमनिकटागमिकयूवा॥ तयूववीवाववीयविस्फावजीकृतयय। स्वगेयववलाक
 स्ववर्त्तुसंहाया॥ किल॥ निवधवाकात्तंकारजिज्ञासानूनयखल। समीपारुवग॥ नीयसा
 कल्याहिमुखहिग॥ नामयकाशया॥ यादुमिथान्नानवदस्ययि। जिवाकडोमिर्यगा॥ धरावि

आदलुगारिषू॥ अरुहयहुगखद दिहतावतधन॥ अन्नकार्यवर्ग॥ ॥ विनायविनवागायवि
वशायाविनवर्क॥ मरु॥ ॥ यून॥ गन्धदही दूमसकसमा॥ ॥ आसटिर्गजसाद्रायडादीरु
सपतिदुग। वनवसुद्धकिमग स्वत्यगीवचनिरुव॥ यथामिनानकवलरु दिनुमात्राववर्जन। १०४०
कथमसुतादुता वसाकल्यसुविन्न॥ कदाविज्ञातुमाद्रुसार्कसर्गसर्मसद। अन्नकल्यार्थ
कंधावै वार्थकसुवृथामुत्र॥ अहाडगाहाकिमग विकल्यकिंकिमूयग। उदिवसमरुवेयाद

यून॥ गयूननसुगे॥ दिवाक्रीत्यर्थदावावनकं वन्नजनाविति॥ तिर्यगर्थसायिनिवा अथमंवा
वनार्थका॥ ॥ ॥ ॥ गददेरु॥ समयानिकवादिनुक्। अन्नकिंनसुसदसा स्वात्यून॥ यूनगा
याग॥ किंविदीयन्ननागल्य अस्मामुगुरुवानकवा वद्यायथागथवेवै साम्यहादीवविस्मय॥ मो
ननुगवृग्वृकीसय॥ मयदिगगन्का॥ दिष्टासमूयजार्थयस्यानन्दथानकवन्नवा। अन्नक
म॥ अस्म॥ यसमनुद॥ अर्थकं॥ युकदसंयगं सुनरीदूंगन्धदनावन। अहावनमनातायिमा

समाहृत्य वात्र (७) ॥ यत्कान्क वयं यदिय गगनं द्वां जया दयं । याका (७) या दूना वि१ सा दा भव वयं
मन ॥ समननगदुयत्रिगः सर्वगातिष्वगितिययि जूका मानमनो काममयूयायगमसुय ॥ न
नूयणादिना (७) काकी वि कामयवदन । नि१ यमदू१ यमगर्भ यथमर्धुयथयथी ॥ मिथामिथ्याः १०४
यविग (७) यथार्थतुयथयथी । सुववदुयनद्वेवत्यवकात्र वाचका ॥ यगतीगाथक नूनम
दधीनिशिम दयं । सर्वदयं वनलद्वीक जूमावर्धं यमात्मना ॥ मुल्यनीत्रे मंदरुच्ये १ याया रूमा